सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ईमेल: tameer1963@gmail.com पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जुलाई, 2019 वर्ष 18 अंक 05

सलाम व रहमत नबी पे या रब

हुब्बे रब जो रखता है
हुब्बे नबी वह रखता है
हुब्बे नबी जो रखता है
हुब्बे सहाबा रखता है
हुब्बे नबी का रखने वाला
नबी की ताअत करता है
नबी की ताअत करने वाला
रब की रिजा को पाता है
सलाम व रहमत नबी पे या रब
और उन की आल पर
उन की सब अज़्वाज पर
उनके सब अस्हाब पर

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
उमरा, हज और ज़ियारत	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	16
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	18
फजाइले हज	अब्दुल्लाह मतलूब नदवी	21
सृष्टि के रचियता	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
हज के पाँच दिन	इदारा	26
प्रिय भ्राता	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	30
इस्लामी कल्याणकारी व्यवस्थाएं	मौलाना सय्यिद जलालुद्दीन उमरी	39
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अनआमः

अनुवाद–

और अगर आप देखें कि जब वे दोज़ख (नरक) के सामने ठहराए जाएंगे तो कहेंगे काश कि हम दोबारा भेज दिये जाएं और हम अपने पालनहार की निशानियों को न झुठलाएं और हम ईमान वालों में हो जाएं(27) कुछ नहीं बल्कि वे जो छिपाते थे वह खुल गया और अगर वे दोबारा भेज दिए जाएं तो वही करेंगे जिससे उनको रोका गया और वे तो झूठे हैं[(1)](28) और वे कहते हैं कि हम को तो यही दुन्या की ज़िन्दगी है और हम को फिर नहीं उठना है(29) और अगर आप देखें जब वे अपने पालनहार के सामने खड़े किये जाएंगे, इरशाद होगा क्या यह सच नहीं है वे कहेंगे हमारे पालनहार की कसम क्यों नहीं, अल्लाह तआला कहेंगे कि तुम जो इनकार करते थे उसके कारण अज़ाब (दण्ड) का मज़ा चखो(30) जिन लोगों ने अल्लाह की मुलाक़ात को झुठलाया वे घाटे ही में रहे यहां तक कि जब उन पर अचानक क़यामत (महा प्रलय) आ पहुंचेगी तो वे कहेंगे हाय अफसोस हमने उसमें कैसी कोताही की और वे अपनी पीठों पर बोझ लादे होंगे देखो कैसा बुरा बोझ है जो वे ढ़ोते फिर रहे हैं(31) और दुन्या का जीवन तो खेल तमाशे के सिवा कुछ नहीं और आखिरत का घर ही परहेज़गारों (संयमी लोगों) के लिए बेहतर है, फिर क्या तुम समझ से काम नहीं लेते(32) हम जानते हैं कि उनकी बातों से आपको ज़रूर दुख होता है तो वे (केवल) आप ही को नहीं झुठलाते बल्कि वे अत्याचारी लोग तो अल्लाह की निशानियों का ही इनकार करते हैं[(2)](33) और आपसे पहले कितने रसूल झुठलाए जा चुके हैं तो वे झुठलाए जाने और तकलीफ़ पहुंचाए जाने पर सब्र करते रहे यहां तक कि हमारी मदद उनके पास आ पहुँची और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और आपको पैग़म्बरों के हालात भी मालूम हो ही चुके हैं[(3)](34) और अगर आपको उनका मुँह फेरना भारी मालूम होता है तो अगर आपके बस में हो तो ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी तलाश कर लीजिए फिर उनके पास कोई निशानी ले आइए और अल्लाह चाहता तो सबको हिदायत (सत्यमार्ग)

पर ले ही आता तो आप नादानी के कामों में हरगिज़ न पड़ें[4](35) स्वीकार तो वे लोग करते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर वे उसी की ओर लौटाए जाएंगे[5](36) और वे बोले कि उनके पास उनके पालनहार के पास कोई निशानी क्यों नहीं आई, आप कह दीजिए कि बेशक अल्लाह निशानी उतारने की सामर्थ्य (कुदरत) रखता है लेकिन उनमें अधिकतर लोग नहीं जानते[6](37) और धरती में चलने वाले जो भी जानवर हैं और जो पक्षी भी अपने दोनों परों पर उड़ते हैं वह तुम्हारी तरह की उम्मतें हैं, हमने किताब में कुछ कमी नहीं की, फिर वे सब अपने पालनहार के पास एकत्र किए जाएंगे(38) और जिन्होंने हमारी निशानियां झुठलाईं वे अंधेरों में बहरे और गूंगे पड़े हैं, अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे उसे सीधे रास्ते पर कर दे[7](39) आप कह दीजिए कि देखो अगर अल्लाह का अज़ाब (दण्ड) तुम पर आ जाए या क़यामत (महाप्रलय) तुम पर आ पहुँचे तो सच–सच बताओ कि क्या तुम अल्लाह के अलावा किसी और को पुकारोगे(40) नहीं बल्कि तुम उसी को पुकारोगे फिर जिस तकलीफ़ के लिए तुम उसको पुकारते हो अल्लाह अगर चाहता है तो उस चीज़ को दूर कर देता है और फिर तुम सारे साझीदारों को भूल जाते हो[8](41) और हमने आपसे पहले भी उम्मतों (समुदायों) की ओर पैग़म्बर भेजे फिर हमने उनको सख़्ती और तकलीफ़ में जकड़ लिया कि वे शायद गिड़गिड़ाएं(42) फिर जब हमारा अज़ाब (दण्ड) आ पहुंचा तो वे क्यों न गिड़गिड़ाए बल्कि उनके दिल और कठोर हो गए और शैतान ने उनके कामों को उनके लिए मनमोहक बना दिया(43)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. पहले हिसाब–किताब शुरु होते ही कह चुके थे कि हम मुश्रिक (बहुदेववादी) नहीं हैं अब सब खुल गया और लगे मानने, दुन्या में भी जो सत्य छिपाते रहे थे वह भी खुल कर सब सामने आ जाएगा और वे तमन्ना करेंगे कि दोबारा हम को भेज दिया जाए हम ईमान वालों में हो जाएंगे, अल्लाह कहता है सब झूठ है उनके अन्दर की बुराई फिर उभर कर सामने आ जाएगी।

2. दुन्या ही को सब कुछ समझने वालों के सामने वास्तविकता खुल जाएगी और मालूम हो जाएगा कि यह खेलकूद के सिवा कुछ नहीं था बस वही क्षण काम आएंगे जो अल्लाह की बन्दगी (उपासना) में बीते।

3. अल्लाह की ओर से यह सांत्वना की बातें की जा रही हैं।

4. अल्लाह चाहता तो बिना निशानी के सब को मुसलमान

शेष पृष्ठ ......08...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

एहसान का बदलाः—

हज़रत उसामा बिन ज़ैद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर किसी के साथ कोई एहसान किया गया और वह एहसान करने वाले के सामने "जज़ाकल्लाहु खैरा" (अल्लाह तुम को अच्छा बदला दे) कह दे तो गोया उसने एहसान करने वाले की पूरी तारीफ कर दी। (तिर्मिजी)

औलाद के हक में बद दुआ न करने का आदेशः—

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम अपनी जानों, मालों और औलाद को बद दुआ मत दो (जैसे बाज लोग गुस्से में आ कर कह देते हैं तेरे हाथ टूटें, तेरा नास हो वगैरह) ऐसा न हो कि वह कबूलियत की घड़ी हो तो वह तुम्हारी बद दुआ कबूल हो जाये। (मुस्लिम)

दुआ के कबूल होने की रुकावटेंः—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हारी दुआऐं जरूर कबूल होती हैं अगर जल्दी न करो, और यह न कहो कि मैंने दुआ की और कबूल न हुई। (बुखारी व मुस्लिम शरीफ)

और मुस्लिम शरीफ की एक रिवायत में है कि बंदे की दुआ हमेशा कबूल होती है जब तक कि वह दुआ गुनाह की और रिशता तोड़ने की न हो और यह कि जल्दी न करे, लोगों ने पूछा जल्दी कैसी, फरमाया यह न कहे कि मैंने दुआ की और कबूल न हुई, फिर थक जाये और छोड़ दें

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लोगों ने अर्ज किया कौन से वक़्त दुआ कबूल होती है, फरमाया पिछली रात को (यानी तहज्जुद के वक़्त) और हर फर्ज नमाज़ के बाद।

(तिर्मिज़ी)

कबूलियत या उसका बदलाः—

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर मुसलमान की दुआ अल्लाह तआला कबूल फरमाता है—

उसकी मुंह मांगी मुराद अता फरमाता है, और अगर किसी मस्लिहत से नहीं देता तो उसकी किसी आने वाली मुसीबत को दूर फरमा देता है मगर गुनाह और रिशता तोड़ने की दुआ न हो, एक आदमी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह अब तो हम बहुत कुछ मांग लेंगे, आपने फरमाया अल्लाह तआला उससे भी ज़ियादा अता फरमाने वाला है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू सईद रज़ि0 से रिवायत है कि अगर मुंह मांगी मुराद न मिली तो उतना ही अज्र उसके लिए रख छोड़ता है।

मुसीबत के वक़्त की दुआः—

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम रंज व मुसीबत के समय यह दुआ पढ़ा करते थे— अनुवादः अल्लाह बुजुर्ग बुर्दबार के सिवा कोई माबूद नहीं, अल्लाह बड़े अर्श के मालिक के सिवा कोई माबूद नहीं अल्लाह तआला जमीन व आसमान और इज्जत वाले अर्श के मालिक के सिवा कोई माबूद नहीं। (बुखारी—मुस्लिम)

बात कहे तो बेहतर कहे वरना खामोश रहेः—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो उसको चाहिए कि बात कहे तो बेहतर कहे वरना खामोश रहे। (इस हदीस से साफ जाहिर हो गया कि इंसान को अच्छी बात कहना चाहिए जिस में कोई मस्लिहत हो और जिससे कोई भलाई जाहिर हो और जब भलाई के जाहिर होने में कोई शक हो तो खामोशी बेहतर है इसलिए कि सलामती सिर्फ खामोशी में है।

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा ....

बना देता लेकिन यह अल्लाह की नीति नहीं कि सब को ईमान पर मजबूर कर दिया जाए तो आप किसी ऐसी निशानी के ख्याल में न रहें जिसका दिखाना अल्लाह का नियम नहीं इसलिए कि वांछित निशानी आ जाने के बाद अगर इसका इनकार किया जाए तो उसका अज़ाब पूरी क़ौम पर आता है जैसा कि पिछली क़ौमों के साथ हो चुका है और इस समय के मुश्रिकीन का हाल भी यही है अगर इनकी मांगी हुई निशानी आ भी जाए तो भी वे ईमान लाने वाले नहीं हैं और फिर उसका परिणाम सब पर अज़ाब की शक्ल में आएगा और अल्लाह को यह मंजूर नहीं।

5. आप सबसे मानने की आशा न रखें जिनके दिल में अल्लाह ने कान नहीं दिए वे सुनते ही नहीं तो कैसे मानें वे तो मुर्दों की तरह हैं क़यामत (महाप्रलय) में विश्वास हो जाएगा।

6. यानी न मानने के परिणाम में उसका क्या नतीजा मिलेगा उससे अवगत नहीं हैं।

7. अल्लाह के सामर्थ्य की निशानियां हर जगह हैं हर प्रकार के जानवरों की अपनी अपनी निर्धारित व्यवस्था है, मनुष्य की अपनी व्यवस्था है, अल्लाह पैग़म्बरों के द्वारा उनको रास्ता बताता है अगर विचार करें तो यही निशानी काफ़ी है लेकिन बहरा, गूँगा, और अंधा कैसे देखे, कैसे समझे और यह जो कहा कि हमने किताब में कोई कमी नहीं की इसका अर्थ लौह—ए—महफ़ूज़ (ईश्वरीय ज्ञान) है।

8. जब मुसीबत आ पड़ती है तो अल्लाह ही की याद आती है सारे साझीदार हवा हो जाते हैं तो क़यामत (महाप्रलय) का महान विपदा को याद करो और अल्लाह को मानो यह वहां तुम्हारे काम आए।

❖❖❖

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

उमरा, हज और ज़ियारत

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

''उमरा'' इस्लाम धर्म का एक पारिभाषिक शब्द है मक्का मुकर्रमा पहुंच कर एक विशेष उपासना का नाम है जिस का कुछ विस्तार यहां किया जाता है।

मक्का सऊदी अरब का एक शहर है इस के साथ मुकर्रमा इसके सम्मान के लिए लगाया जाता है, मुकर्रमा का अर्थ है सम्मानित, मक्का मुकर्रमा अर्थात सम्मानित मक्का, उमरा के विषय पर कुछ लिखने से पहले इसमें प्रयोग होने वाले पारिभाषिक शब्दों का वर्णन आवश्यक है। मक्का शहर में एक घर है जिसको क़अ़बा (क़ाबा) कहते हैं अल्लाह ने इस को अपना घर कहा है, अल्लाह तो किसी घर में सीमित नहीं हो सकता। इस घर के सम्मान हेतु अपना घर कह दिया और वह बैतुल्लाह कहलाता है।

इसके गि़र्द जो मस्जिद है उसको मस्जिदे ह़राम कहते हैं। मस्जिदे हराम का अर्थ है प्रतिष्ठित मस्जिद, इस मस्जिद को हरम भी कहते हैं। मक्के के गिर्द कुछ सीमाएं निर्धारित हैं, उन सीमाओं के अन्दर के स्थान को ह़रम कहते हैं, हरम में रहने वालों को "ह़रमी" कहा जाता है।

हरम के बाहर चारों ओर कुछ स्थान निर्धारित हैं उनको मीक़ात कहते हैं। उनके बाहर रहने वालों को ''आफ़ाकी़'' कहा जाता है, आफ़ाक़ी लोग मक्का आने के लिए एहराम बांधे बिना मिक़ात के अन्दर प्रवेश नहीं कर सकते अगर वह एह़राम के बिना मीक़ात के अन्दर आ जाएं तो उनके लिए दो आदेश हैं, एक यह कि वह लौट कर मीक़ात पर एह़राम बांध कर मीक़ात के अन्दर आएं, दूसरे यह कि अगर वह लौट कर मीक़ात पर एह़राम ना बांधे तो उन पर एक क़ुर्बानी का जुर्माना है।

मीक़ात और ह़रम के बीच का स्थान हि़ल्ल कहलाता है और उन स्थानों पर रहने वाले हि़ल्ली कहलाते हैं। जैसे जद्दे वाले हि़ल्ली कहलाते हैं। जो आदमी बिना एह़राम के मीक़ात पार कर जाये वह एक कुर्बानी का जुर्माना तो देगा ही मगर हि़ल्ल में एह़राम बांधे बिना न उमरा कर सकता है न हज़। अब उमरा के तरीक़े (परिधि) को समझें।

जो व्यक्ति उमरा करने के इरादे से मक्का मुकर्रमा का सफ़र करे उसे चाहिए कि अपने एयरपोर्ट ही पर पाक साफ हो कर सिले कपड़े उतार दे एक चादर नीचे पहन ले दूसरी

ऊपर से ओढ़ ले यह एह़राम की चादरें कहलाती हैं लेकिन सिर्फ़ इनके पहन लेने से आदमी एह़राम में नहीं आ जाता, बेहतर है कि दो रकअ़त नमाज़ पढ़े फिर नीयत करे कि या अल्लाह मैं उमरा करने की नीयत करता हूं तू उमरा करना मेरे लिए आसान कर दे। फिर यह कलिमात आवाज़ से पढ़े— लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक़ लक लब्बैक इन्नल हम्द वन्नेअ़मत लक वल मुल्क ला शरीक़ लक (जिन पूरे अक्षरों पर हलन्त न हो उनको पृथक अक्षर की भांति जबर से पढ़ें, ज़बर के लिए आ की मात्रा लगाना ग़लत है) यह कलिमात मर्द तेज़ आवाज़ से और औरतें आहिस्ता आवाज़ से अदा करें। अब मर्द सर खोल दें और औरतें चेहरा खोल दें। सिले कपड़े उतारना मर्दों के लिए अनिवार्य हैं, औरतें अपने आम कपड़ों में रहेंगी, इसको एहराम बांधना कहते हैं, और एहराम बांधने वाले को ''मुहरिम'' कहते हैं, अब एहराम की कुछ पाबंदियां हैं। मर्द सिले कपड़े नहीं पहन सकते, सर खुला रखेंगे। बनयान, अण्डर वियर, मोज़े भी नहीं पहन सकते, औरतें चेहरा खुला रखें कोई अजनबी आजाए, तो पंखे वगैरह से आड़ कर लें। खुशबू लगाना सबके लिए मना है, सांप बिच्छू जैसे जानवरों को छोड़ कर तमाम जानवरों को मारना मना है, जुएं चीलर भी मारना मना है। बाल मूंडना, काटना, उखाड़ना और नाखुन काटना मना है और औरत से मिलाप मना है। एहराम में जो चीज़ें मना है अगर उनमें से कुछ हो जाएं तो बाज़ गलतियों पर तो दम देना पड़ता है, बाज में सद्क़ा, जब ऐसी गलती हो जाए तो किसी जानकार आलिम से रुजूअ़ करें।

जो लोग मीक़ात के अन्दर रहते हैं यानी हिल्ल में रहते हैं वह उमरे का एहराम वहीं बांधें, जो लोग हरम के हुदूद (सीमाओं) में रहते हैं वह उमरे का एहराम हिल्ल में जा कर बांधे, एहराम बांधने के बाद अब जब तक उमरा पूरा न कर लें एहराम से बाहर नहीं हो सकते, यानी हलाल नहीं हो सकते। किसी शरई मजबूरी से उमरा न कर सकें तो किसी आलिम से रुजूअ़ करें।

एह़राम बांध कर मक्का मुकर्रमा पहुंचें और बा वज़ू दुआ़ पढ़ कर मस्जिदे हराम में हाज़िर हों एहराम बांधने के बाद खूब लब्बैक पढ़ते रहें, काबे पर नज़र पड़ते ही लब्बैक कहना बन्द कर दें और अल्लाहु अक्बर कह कर खूब दुआएं करें दुआएं अपनी ज़बान में मांगे, अरबी दुआएं याद हों तो अरबी दुआएं पढ़ें, हदीस की दुआएं पढ़ें अस्ल में दुआ

मांगना है चाहे अपनी ज़बान में हो या अरबी ज़बान में।

अब हजरे अस्वद (काला पत्थर) के कोने पर आएं मर्दों के लिए सुन्नत यह है कि ऊपर की चादर दाहने कांधे के नीचे से निकाल कर बाएं कांधे पर डाल लें यह इज़्तिबाअ़ है अब हजरे अस्वद से कुछ पहले रूक्ने यमानी की ओर खड़े हो कर कअ़बे की ओर मुंह कर के नीयत करें कि ऐ अल्लाह मैं तवाफ़ की नीयत करता हूं मेरे लिए तवाफ़ करना आसान कर दे। फिर हजरे अस्वद के सामने आ कर उसकी तरफ़ दोनों हथेलियां बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर उठाए और चूम लें इसको इस्तिलाम कहते हैं। अब दाहने हाथ की ओर मुंह करके तवाफ़ शुरुअ़ करें। आज कल भीड़ में हजरे अस्वद के पास पहुंचना मुशकिल होता है। इसलिए हजरे अस्वद की सीध में हरी बत्ती लगा दी गई है उसकी सीध में पहुंच कर तवाफ़ की नीयत करके दोनों हाथ हजरे अस्वद की ओर उठा कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर तवाफ़ शुरु करें, सिर्फ मर्दों के लिए सुन्नत है कि इस तवाफ़ के शुरु के तीन चक्करों में ज़रा अकड़ अकड़ कर चलें और सातों चक्करों में इज़्तिबाअ़ करें, तवाफ़ करते वक़्त क़ाबा बाएं हाथ रहेगा। आगे बढ़ कर जो कोना आएगा उसको रुक्ने इराक़ी कहते हैं, कोने के बाद छोटी दीवारों से घिरा बगैर छत का ह़तीम का हिस्सा है, इसके अन्दर से भी रास्ता है मगर तवाफ़ में हतीम के बाहर से चक्कर लगाना ज़रूरी है। इसलिए कि हतीम क़ाबे का हिस्सा है, अब आगे जो कोना मिलेगा वह रुकने शामी कहलाता है, फिर आगे जो कोना है वह रुकने यमानी है, अगर भीड़ न हो, तो रुकने यमानी को दाहने हाथ से छू लें भीड़ हो तो कुछ न करें, अब आगे हजरे अस्वद वाला कोना आ गया और एक चक्कर पूरा हो गया, अब फिर हजरे अस्वद का इस्तिलाम कर के दूसरा चक्कर शुरुअ करें। इस तरह सात चक्कर पूरे करें। चक्कर लगाते वक़्त आगे को अदब से चलें। तवाफ़ के वक़्त कअबे की तरफ़ सीना करना मना है, तवाफ़ में अपनी ज़बान में या अरबी में जाइज़ दुआएं पढ़ें, कुर्आन शरीफ़ की सूरतें पढ़ें, दुरूद पढ़ें, बातें न करें, बेहतर है कि रुकने यमानी और हज़रे अस्वद के बीच यह दुआ पढ़ें, ''रब्बना आतिना फिद्दुन्या हसनतंव, व फिल आख़िरती हसनतंव वक़िना अ़ज़ाबन्नार'' सात चक्कर पूरे हो जाएं तो जहां जगह मिले दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें यह नमाज़ वाजिब है, अब पेट भर के ज़मज़म पियें और ख़ूब दुआएं करें, फिर हजरे अस्वद का इस्तिलाम कर के सफ़ा

पहाड़ी पर आएं, यहां याद हो तो चौथा कल्मा पढ़ें अब सई की नीयत से मरवा पहाड़ी की ओर चलें थोड़ी दूर पर दो हरी बत्तियां दिखेंगी इनको मीलैन अख़्ज़रैन कहते हैं इन के बीच में मर्दों के लिए झपट कर चलना सुन्नत है और औरतें अपनी चाल चलें, मरवा पहुंच कर एक शौत यानी एक चक्कर हुआ, फिर इसी तरह मरवा से सफा जाएं यह दो चक्कर हुए इस तरह सात चक्कर पूरे करें, जो मरवा पर पूरे होंगे। सई में भी ख़ूब दुआएं करें। अब बाहर निकल कर मर्द सर मुंड़ा लें या कतरवा लें, औरतें अपने हाथ से कैंची से अपनी चोटी से एक अंगुल बाल काट दें या किसी औरत से या अपने शौहर से या अपने किसी महरम मर्द से एक अंगुल बाल कटवा लें अब उमरा पूरा हो गया।

उमरा साल में किसी भी वक़्त कर सकते हैं सिर्फ़ 9,10,11,12,13 ज़िलहिज्ज इन पाँच दिनों में उमरा करना मना है। एक सफ़र में एक से ज़ियादा उमरा करना चाहें तो दूसरे उमरे के लिए हिल्ल में जा कर और बेहतर है मस्जिदे आ़इशा में जा कर उमरे का एहराम बांधे और उमरा करें।

जिस शख़्स को मक्का मुकर्रमा आने जाने पर सामर्थ्य हो उस पर ज़िन्दगी में एक बार उमरा करना सुन्नते मुअक्किदा है।

हज्जः–

जिस को अपने निकट सम्बन्धियों के खाने पीने के प्रबन्ध कर देने के बाद हज्ज के ज़माने में मक्का मुकर्रमा आने जाने पर सामर्थ्य हो तो जीवन में एक बार उस पर हज फर्ज़ है।

हज तीन प्रकार के होते हैंः–

1. हज्जे इफराद
2. हज्जे तमत्तुअ़
3. हज्जे क़िरान

हज्जे इफराद में केवल हज्ज किया जाता है।

हज्जे तमत्तुअ़ (तमत्तो) में पहले उमरा किया जाता है।

हज के महीने (शव्वाल, ज़ीकादा और शुरुअ़ ज़िलहिज्ज) में उमरा करके हलाल हो जाते हैं फिर 8 ज़िलहिज्ज को हज का एहराम बांध कर हज पूरा करते हैं।

क़िरान में एहराम बांधते वक़्त उमरा और हज्ज दोनों की नीयत करते हैं और उमरा कर के सर नहीं मुंडाते, ह़लाल नहीं होते और उसी एह़राम से हज करते हैं। हमारे यहां के लोग आम तौर से तमत्तुअ़ (तमत्तो) हज करते हैं इसलिए उसी का तरीक़ा लिखा जाता है।

हमारे यहां के ज़ियादा तर लोग पहले मदीना पहुंचाए जाते हैं फिर हज्ज के लिए मक्का लाए जाते हैं मदीना की ओर से मीक़ात जुल हुलैफा है उसे बिअरे अली भी कहते हैं वहां एहराम बांधने की सुहूलतें हैं

उमरे में लिखे तरीक़े पर वहां उमरे का एहराम बान्धे और मक्का मुकर्रमा पहुंच कर उमरे में लिखे तरीक़े से उमरा पूरा करें और हलाल हो जाएं।

अगर आप पहले मदीना न जाएं सीधे जद्दा पहुंचाए जाएं तो अपने एयरपोर्ट ही पर उमरे का एहराम बांध लें और मक्का पहुंच कर उमरा करके हलाल हो जाएं अगर इंतिज़ार के ज़माने में दूसरा उमरा करना चाहें तो मस्जिदे आईशा जा कर वहां उमरे का एहराम बांध कर दूसरा उमरा करें।

हज्ज का तरीक़ाः–

8 जिलहिज्ज की सुब्ह को उमरे के एहराम की तरह हज्ज का एहराम बांधे उसकी नीयत इस प्रकार करें, नीयत करता हूं मैं हज्ज की ऐ अल्लाह मेरे लिए हज करना आसान फरमा फिर उसी तरह लब्बैक पढ़ें मर्द सर खोल दें और आरतें चेहरा खोल दें और खूब लब्बैक पढ़ते रहें। औरत अगर हैज़ से हो तो वह भी एहराम की नीयत करके तल्बिया यानी लब्बैक पढ़ती रहे अलबत्ता वह नमाज़ नहीं पढ़ सकती, तिलावत नहीं कर सकती मस्जिद में दाख़िल नहीं हो सकती।

अब सब लोग मिना जाएं वहीं जुह्र, अस्र, मग़रिब, इशा और 9 की फ़ज्र की नमाज़े अदा करें। उमरे में बयान की गई एहराम की पाबन्दियों का पूरा ख़याल रखें। 9 जिलहिज्ज की फ़ज्र की नमाज़ के बाद तक्बीरे तशरीक़ भी पढ़ें। अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर, लाइलाह इल्लल्लाह वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द यह तक्बीरें 13 ज़िलहिज्ज की अस्र तक हर फ़र्ज नमाज़ के बाद पढ़ी जाती रहें। लब्बैक खूब पढ़ते रहें, 9 जिलहिज्ज की सुब्ह को अरफात के मैदान जाएं यह हज्ज में फर्ज़ है अरफ़ात में ख़ूब दुआएं पढ़ें वहीं जुह्र व अस्र की नमाज़ें अदा करें और मग़रिब का वक़्त हो जाने पर मग़रिब पढ़े बिना मुजदल्फ़ा को रवाना हों, मुजदल्फा पहुंच कर मग़रिब व इशा दोनों नमाज़ें एक साथ पढ़ें और रात वहीं गुज़ारें खूब दुआएं करें, सुब्ह को फ़ज्र पढ़ कर ज़रा रुकें यह मुजदल्फा का वकूफ़ है और यह सूरज निकलने से पहले फ़ज्र के वक्त में वाजिब है छूट जाए तो दम देना पड़ेगा।

फिर वहीं 50 कंकरियां रमी के लिए चुन लें और मिना को रवाना हों, यह बड़ी भीड़ का वक़्त होता है, अल्लाह आसान करे, मिना पहुंच कर जमरात जाएं सात कंकरियां साथ ले जाएं और जमरतुल अक़्बा (बड़े शैतान) के पास पहुंच कर लब्बैक कहना बंद कर दें, और एक एक कर के सातों कंकरियां बड़े शैतान को मारें हर कंकरी मारने के वक़्त

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर पढ़ें वहां से वापस आ कर कुर्बानी करें अगर कुर्बानी किसी और से कराई है तो यह यक़ीन करके कि कुर्बानी हो गई होगी सर मुंडा लें या कतरवा लें औरतें अपने हाथ से कैंची से अपनी चोटी से एक अंगुल काट लें या किसी औरत से कटवा लें और हलाल हो जाएं, लेकिन मुकम्मल हलाल होने के लिए तवाफे ज़ियारत बाक़ी है, अब आप नहा धो कर कपड़े बदल कर या एहराम ही के कपड़ों में हरम जाएं और तवाफ़े ज़ियारत करें जैसे उमरे में किया था अगर एहराम की चादरों में हों तो मर्द इज़्तिबाअ़ करें और शुरुअ़ के तीन चक्करों में रमल भी करें।

सात चक्कर पूरे करके दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें, ज़मज़म पियें और उमरे की सई की तरह सई करें, अब मिना वापस आएं और 11 को जुह्र के बाद 21 कंकरियां ले कर जमरात जाएं पहले छोटे शैतान को कल की तरह सात कंकरियां एक एक करके मारें फिर बीच के शैतान को इसी तरह सात कंकरियां मारें फिर बड़े शैतान को इसी तरह सात कंकरिया मारें। 12 ज़िलहिज्ज को फिर जुह्र के बाद 11 की तरह तीनों शैतानों को कंकरियां मारें और 12 को मग़रिब से पहले अपनी क़ियाम गाह पर आजाएं अब आप का हज्ज पूरा हो गया अल्लाह क़बूल करे।

अब घर वापसी का इन्तिज़ार करें और वापसी से पहले तवाफ़े वदाअ़ करें कि यह वाजिब है अब खजूरों और ज़मज़म के साथ अपने वतन आएं लोगों को ज़मज़म पिलाएं, खजूरें खिलाएं, लोगों को दुआएं दें और उनसे दुआएं लें।

ज़ियारतः-

ज़ियारत से तात्पर्य है मदीने की हाज़िरी, मदीना नगर का नाम है, उसके सम्मान हेतु उसके साथ तय्यिबा, मुनव्वरा आदि लगा देते हैं, जैसे मदीना तय्यिबा अर्थात स्वच्छ मदीना, मदीना मुनव्वरा अर्थात प्रकाशवान मदीना आदि।

प्रबन्धानुसार (इन्तिज़ामन) हज से पहले आपको मदीना पहुंचाया जाए या हज के बाद, आप जब मदीना का सफ़र शुरुअ करें तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत ताज़ा करें, और रास्ते में नअ़त के अशआर पढ़ें और दुरूद शरीफ़ पढ़ें मदीना तय्यिबा पहुँच कर ठहरने की जगह प्राप्त करने के बाद पाक साफ़ व बावजू नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में हाज़री दें।

मस्जिद में दाखिले की दुआ पढ़ कर मस्ज़िद में दाखिल हों, अगर सूरज निकलने या डूबने या जवाल का वक़्त हो तो ज़रा रुकें फिर दो रकअ़त नमाज़ तहीयतुल मस्जिद पढ़ें, अगर

किसी वक़्त की जमाअ़त हो रही हो तो तहीयतुल मस्जिद पढ़े बिना उसमें शरीक़ हो जाएं नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर इन्तिज़ार करें कि क़ब्रे मुबारक पर हाज़िरी का मौक़ा कब मिलता है, भीड़ के सबब कब्र पर हाज़िरी का एक नज़्म होता है उसी नज़्म के तहत लाइन लगा कर रौज़े पर हाज़िर हों, रौज़ा शरीफ़ के दक्खिन जानिब की दीवार में लगभग तीन फिट ऊँचाई पर चार गोल होल (सूराख़) हैं, पच्छिम के एक होल को छोड़ कर तीनों होल मवाजेह शरीफ़ कहलाते हैं इन तीनों में पच्छिम वाले के सामने बड़े अदब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करें, हमारे नज़दीक अत्तहीयात वाला सलाम ''अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहु'' पढ़ना बेहतर है, कि दाहने तरफ़ खिसक कर पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को सलाम करें, फिर जरा दाहने खिसक कर दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर रज़ि0 को सलाम करें, भीड़ के सबब रुकने नहीं दिया जाता है ताकि दूसरों को भी सलाम करने का मौक़ा मिले। सलाम तो आप जहां से चाहें वहां से पेश करें सय्याहीन फ़िरिश्ते तुरन्त पहुंचाएंगे मगर रौज़े पर हाज़िर हो कर सलाम करने की नेकी का कोई बदल नहीं।

आपको नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में चालीस फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ लेने का मौक़ा दिया जाएगा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में हर नमाज़ का हज़ार गुना सवाब मिलता है, लिहाज़ा आप को चाहिए कि आप इस मस्जिद में चालीस फ़र्ज़ नमाज़ें जमाअ़त से ज़रूर अदा करें इस में कोताही न करें। अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो तहज्जुद इशराक़ और दूसरी नवाफिल भी पढ़ें, तिलावत करें, दुआएं मांगे दुरूद शरीफ़ पढ़ें। और जब भी मौक़ा मिले रौज़े पर हाज़िर हो कर सलाम पढ़ें।

मौक़ा निकाल कर इशराक़ के बाद किसी रोज़ उहुद जा कर शुहदाए उहुद को सलाम करें उनको इसाले सवाब करें, मस्जिदे क़ुबा जा कर वहां दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ें, मस्जिदे किब्लतैन की ज़ियारत कर आएं, जन्नतुल बक़ीअ जा कर वहां के बुज़ुर्गों को सलाम कर के कुछ इसाले सवाब कर आएं, इन ज़ियारतों के लिए वहां आसानी से गाड़ियां मिल जाती हैं मगर ख़ूब याद रहे फ़र्ज नमाज़ के वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद पहुंच कर जमाअ़त से नमाज़ अदा करें।

चालीस नमाज़ों का मौक़ा मिलने के बाद आप को इन्तिज़ामन वहां से रुख़सत होना पड़ेगा, आप बड़े रंज के साथ दुरूद पढ़ते हुए और आंसू बहाते हुए

शेष पृष्ठ...22 पर

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत (आज्ञापालन) व महब्बत में क़ौम का कल्याण हैः–

उम्मतों की तकदीरें, उनमें भेजे गये रसूलों की आज्ञापालन, उनके झण्डे तले जमा होने, उनकी सीरत (आचरण) को अपनाने और मान–सम्मान हर हाल में उनसे जुड़े रहने से सम्बन्धित होती है।

अतएव कोई उम्मत तमाम ताक़तों, संसाधनों के साथ युग, संस्कृति, दर्शनशास्त्रों तथा हालात और तरक्कियों के बावजूद कामयाब नहीं हो सकती, जब तक कि वह नबी का अनुसरण, उससे लगाव और उसके बुलावे (दावत) के लिए हर हाल में प्रयास न करे। और जो उम्मत भी इस तरीक़े से हट कर इज़्ज़त ताक़त व प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए अपनी कूटनीति या किसी बड़ी ताक़त की पुश्तपनाही पर भरोसा करती है तो उसका अंजाम अपमान व नाकामी, अन्दरूनी फूट और देर सवेर रुसवाई के अलावा कुछ नहीं।

मुहम्मद सल्ल0 की रिसालत महानता और मानव जाति को इसकी आवश्यकताः–

छठी सदी ईसवी में विश्वव्यापी स्तर पर यह हालत नज़र आती है कि पूरी मानव जाति आत्म हत्या पर आमादा ही नहीं कमर कसे हुए है, जैसे खुदकुशी करने की उसने कसम खाई हो, सारी दुन्या में आत्म हत्या की तैयारी हो रही है अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में उस दृश्य व स्थिति की जो तस्वीर खींची है उससे बेहतर कोई बड़े से बड़ा चित्रकार, साहित्यकार व इतिहासकार तस्वीर नहीं खींच सकता।

अनुवादः–*और अल्लाह की उस कृपा को याद करो, कि जब तुम आपस में दुश्मन थे, तो उसने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत डाल दी, तो तुम उसकी मेहरबानी से (आपस में) भाई–भाई बन गये, और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुंच चुके थे। तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया।*

(सूरः आले–इमरान 103)

हमारे इतिहासकारों और सीरत निगारों (जीवन लेखकों) से जाहिलियत की तस्वीर पूरे तौर पर न खिंच सकी। वह न केवल क्षमादान के योग्य बल्कि धन्यवाद के पात्र हैं कि साहित्य व भाषा का भण्डार साथ नहीं देते। घटना और वस्तु स्थिति इतनी संगीन, इतनी नाजुक, इतनी भयावह और इतनी पेचीदा और गम्भीर थी कि लेखनी से उसका चित्रण और भाषा व साहित्य की

बड़ी से बड़ी कुदरत व सलाहियत (क्षमता) से उसकी व्याख्या सम्भव नहीं। कोई इतिहासकार इसका हक कैसे अदा कर सकता है? जाहिलियत (अज्ञानता) का दौर जिसमें अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल0 का अभ्युदय हुआ, क्या वह एक या दो क़ौमों के वतन अथवा नैतिक बिगाड़ की समस्या थी? ख़ाली बुत परस्ती (मूर्ति पूजन) की समस्या थी, नैतिक अपराधों की समस्या थी? मदिरा पान, जुआ बाज़ी भोग विलास, अधिकारों के हनन, अनाचार, आर्थिक शोषण, जालिम हुकूमतों, अत्याचारी व्यवस्था और अन्यायपूर्ण क़ानून की समस्या थी? क्या समस्या यह थी कि किसी देश में बाप अपनी नवजात बच्ची को ज़िन्दा दफ़न कर रहा था? समस्या यह थी कि मनुष्य मनुष्यता को ख़ाक में मिला रहा था। समस्या यह नहीं थी कि अरब के कुछ कठोर दिल लोग अपनी मासूम बच्चियों को झूठी शर्म व लाज से बचने के लिए एक स्वरचित अत्याचार, परम्परा के आधार पर अपने हाथों ज़िन्दा दफ़न कर देना चाहते थे। समस्या यह थी कि मातृ भूमि अपनी पूरी पीढ़ी को ज़िन्दा दफ़न करना चाहती थी। वह युग बीत चुका। अब उसको कैसे ला कर सामने खड़ा कर दिया जाये। वह दौर जिन लोगों ने देखा था, वही इसकी हक़ीक़त (वास्तविकता) को समझते और जानते हैं।

समस्या किसी एक देश व क़ौम की न थी, न किसी एक भ्रम की थी। समस्या मानवजाति की किस्मत की थी। समस्या मानव–जाति के भविष्य की थी। यदि कोई चित्रकार ऐसा चित्र प्रस्तुत करे जिसमें दिखाया गया हो कि मानव–जाति का प्रतिनिधित्व एक इन्सान कर रहा है, एक सुन्दर मनुष्य, एक मोटा ताज़ा तन्दुरुस्त इन्सान जो ख़ुदा की कारीगरी का बेहतरीन नमूना है, जिससे आदम का नाम ज़िन्दा और उसका सिलसिला क़ायम है, जिस पर फरिश्ते हसद करते हैं, जो सर्वोत्तम प्राणी है, जिसके सर पर ख़ुदा ने खिलाफत (प्रतिनिधित्व) का ताज रखा है, और जिसकी वजह से यह धरती एक वीराना नहीं, एक आबाद और गुलजार जगह है, इस इन्सान के सामने आग का एक समुद्र है, एक बहुत गहरा गडढा है, जिसकी कोई थाह नहीं, वह इन्सान इसमें छलांग लगाने के लिए तैयार ख़ड़ा है, उसके पांव उठ चुके हैं, ऐसा नज़र आ रहा है कि कुछ ही पलों में वह उसकी अन्धेरियों में गायब हो जायेगा। अगर उस दौर की ऐसी तस्वीर खींची जाये तो किसी हद तक उस वस्तु स्थिति का अन्दाज़ा (अनुमान) हो सकता है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय के समय पायी जाती थी। और इसी हक़ीक़त को बयान करने के लिए फरमाया गया है किः–

अनुवादः– *और तुम आग के गड्ढ़े के किनारे तक पहुँच चुके थे, ख़ुदा ने तुम्हें उससे बचा लिया।*

(सूरः आले–इमरान 103)

शेष पृष्ठ..29 पर

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0 —अनुवादः अतहर हुसैन

चौथे ख़लीफ़ा
हज़रत अली मुर्तजा रज़ि0 का वर्णन

अधिकारियों के सम्मुख अमली नमूनाः—

जिस प्रकार आप स्वयं जीवन व्यतीत करते थे, इसी तरह चाहते थे कि अफ़सर भी रहें। एक सज्जन को किसी सेवा—कार्य पर नियुक्त करना चाहते थे। उन्हें जुहर के समय अपने यहाँ बुलवाया। वह आदेशानुसार सेवा में उपस्थित हुए। वहां न कोई दरबान था और न द्वारपाल, बे रोक—टोक आपके पास पहुंच गए। देखते क्या हैं कि आपके पास पानी का एक बर्तन और एक प्याला रखा है। आपने एक मुहरबन्द थैला मंगवाया, वह समझे कि मुझ पर विशेष कृपा दृष्टि है, परन्तु आश्चर्य की कोई सीम न रही जब उन्होंने देखा कि मुहर तोड़ने के बाद उसमें से सत्तू निकला। आपने उसे प्याले में डाला, ऊपर से पानी उँडेला फिर स्वयं पिया और उनको पिलाया। उन्होंने साहस करके पूछा, अमीरुल—मोमिनीन। इराक़ में रह कर यह कष्ट क्यों उठाते हैं जहां बहुतायत से अन्न और दूसरी वस्तुएं मिलती हैं?" आपने उत्तर दिया, "मैं कंजूसी तथा कृपणता की वजह से ऐसा नहीं करता हूं अपितु, तथ्य यह है कि मैं इसे उचित नहीं समझता कि पेट में कोई अवैध वस्तु जाये।" आवश्यकतानुसार ख़रीदता हूं और अगर यों ही पड़ा रहे तो इसका भय है कि कहीं यह समाप्त हो जाये और उसके स्थान पर कुछ और मिल जाये।" अपने इस उदाहरण से आपने अधिकारी के मन में यह बात बिठाना चाही कि यह अनुचित साधनों से प्राप्त धन से बचने का प्रयास करे।

स्वयं अपना कार्यः—

व्यक्तिगत अपने लिए लोगों से किसी प्रकार की सेवा कराना पसन्द न करते थे। एक बार खजूरें ख़रीदी, भार अधिक था, लोगों ने चाहा कि यह बोझ आप न उठाएं, अतः प्रार्थना की कि आप कष्ट न करें, हम इस सामान को उठा लेंगे। परन्तु आपने स्वीकार न किया, बल्कि उत्तर दिया, "घर वाला इसके उठाने का अधिक पात्र है।"

निःपक्ष निर्णयः—

न्याय करने में किसी प्रकार का भी पक्षपात उचित न समझते थे। इस बारे में मुस्लिम तथा अमुस्लिम का भी कोई भेद भाव न था। जो इस्लाम के कट्टर विरोधी होते, उनके साथ भी समानता का व्यवहार करना पसन्द करते। एक बार आपका कवच कहीं गिर गया और संयोगवश वह

एक यहूदी को मिला। आपको सूचना मिली तो आपने क़ाज़ी की अदालत में दावा किया और प्रमाण हेतु अपने सुपुत्र हज़रत हसन रज़ि0 और दास क़ंबर को पेश किया। परन्तु क़ाज़ी साहब ने यह कह कर गवाहियां रद्द कर दीं कि हसन आपके पुत्र हैं और पिता के पक्ष में पुत्र की गवाही का विश्वास नहीं। इस प्रकार पूर्ण प्रमाण न मिलने पर दावा ख़ारिज कर दिया गया। क़ाज़ी के निर्णय को निःसंकोच स्वीकार करते हुए लेशमात्र भी अप्रसन्नता प्रकट न की। यहूदी यह दृश्य देख कर बहुत प्रभावित हुआ और कहने लगा कि यह तो पैग़म्बरों तथा नबियों की पद्धति है। क़ाज़ी ख़लीफ़ा के विरुद्ध निर्णय करता है और ख़लीफ़ा उसे बे चूँ—चरा मान लेता है। ईश्वर की सौगन्ध यह धर्म सच्चा है यह कह कर वह मुसलमान हो गया और उसने स्वीकार किया कि कवच वास्तव में हज़रत अली रज़ि0 ही का है।

हज़रत अली रज़ि0 के स्वभाव तथा जनसेवा के उदाहरण स्वरूप आपने कई घटनाएं सुनीं। अब दो—तीन घटनाएं और सुनिए। इससे आपको उनके स्वभाव के बारे में कुछ अनुभव होगा। आपको यह भी ज्ञात हो जाएगा कि वह अपने अनुयायियों को किन गुणों से सुसज्जित देखना चाहते थे और स्वयं किस प्रकार लोगों की देख—रेख और उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहते थे।

श्रृद्धा का चिन्हः—

एक दिन आपको द्वार पर कुछ व्यक्ति खड़े हुए दिखाई दिए। आपने दास क़ंबर को बुला कर पूछा, ''यह कौन लोग हैं''? दास ने कहा, ''अमीरुल—मोमिनीन, यह आपके अनुयायी होने का दावा करते हैं।'' क़ंबर का यह वचन सुन कर आपको बहुत आश्चर्य हुआ कहने लगे ''कितनी विस्मयजनक बात है कि यह लोग अपना सम्बन्ध मुझ से जोड़ते हैं, जब कि इनमें मेरी अभिरुचि की कोई बात ही नहीं। मेरे श्रद्धालुओं की तो कुछ और दशा होती है। उनके चेहरों से अल्लाह का भय तथा अल्लाह का प्रेम झलकता है, वह दुन्या की आनबान में रुचि नहीं रखते, वह अल्लाह की राह में अपनी जान और अपना धन भेंट करने को तत्पर रहते हैं।

जीवन भर ईंट गारे से कोई लगाव न रहा। एक मकान तक नहीं बनवाया। इतिहासकारों ने लिखा है कि आपने ईट पर ईंट नहीं रखी, न कच्ची और न पक्की। न बांस पर बांस रखा अर्थात किसी भी प्रकार का कोई मकान नहीं बनवाया।

न्याय दानः—

अत्याचारी को दण्ड देने के लिए हमेशा तत्पर रहते। यदि तनिक भी इस बात की सूचना मिलती कि कोई किसी पर अत्याचार कर रहा है, तो आप तुरन्त

घटना स्थल पर पहुंचते और उसकी रक्षा का उपाय करते। चाहे यात्रा की अवस्था में हों या अपने स्थान पर, प्रत्येक स्थिति में इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखते थे। एक दिन हमदान से लौट रहे थे। मार्ग में एक ओर से आवाज़ आई, आह! कोई फ़रियाद सुन्ने वाला है? इन शब्दों का कान में पड़ना था कि आप उस आवाज़ की ओर चल पड़े और कहते जाते थे कि कष्ट से दूर होने का प्रबन्ध हो गया और सहायता तुझ तक पहुंच गई। कुछ दूर चलने पर देखते क्या हैं कि एक व्यक्ति दूसरे से लिपटा हुआ है। आपको देख कर प्रार्थना की, अमीरुल–मोमिनीन! मैंने इसके हाथ में सात दिर्हम में कपड़े बेचा है। बेचने से पूर्व मैंने इससे कह दिया था कि दिर्हम अच्छे दे। मैं कोई ख़राब दिर्हम न लूँगा। लेकिन अब मुझे ख़राब दिर्हम दे रहा है। मैंने लेने से इन्कार किया तो इसने मुझे थप्पड़ मार दिया। यह बयान सुन कर आपने दूसरे व्यक्ति से पूछा कि तू क्या कहता है। मामला बिल्कुल साफ़ था, इन्कार की कोई गुंजाइश न थी। इस व्यक्ति ने अपना दोष स्वीकार किया। आपने उसे आज्ञा दी कि अपने वचनानुसार मूल्य चुकाये। जब वह मूल्य अदा कर चुका तो आपने उत्पीड़ित से कहा कि इससे बदला ले। उसने कहा, ''क्या मैं क्षमा कर दूँ?'' आपने कहा, तुम्हें अधिकार है। फिर मुसलमानों के दल को आज्ञा दी कि इस व्यक्ति को पकड़ लो। आपने उसको पन्द्रह कोड़े लगाए और कहा कि यह उस अपमान का बदला है जो तुमने इस व्यक्ति का किया।

हज़रत हसन रज़ि0 का चरित्रः–

सेवा भाव का यह असर आप (हज़रत अली रज़ि0) की सन्तान में भी था। हज़रत हसन रज़ि0 जो आपके पश्चात आपके उत्तराधिकारी नियुक्त हुए और छः मास तक ख़िलाफ़त के पद को शोभा दी, वह भी अपने सेवाभाव हेतु प्रसिद्ध हैं। लोगों की आवश्यकतों को पूरा करना आपका मुख्य उद्देश्य था। यदि कान में किसी भी व्यक्ति की आवाज़ पहुंच जाती तो उसकी पूर्ति के लिए तुरन्त तैयार हो जाते।

एक दिन की घटना है कि रास्ते से गुज़र रहे थे, कोई व्यक्ति विनय कर रहा था, हे प्रभु! दस हज़ार प्रदान कर। आपने निश्चय कर लिया कि इसकी यह कामना अवश्य पूरी करूंगा। तुरन्त घर पहुंच कर दस हज़ार उसके पास भेज दिए। उनकी उदारता की यह दशा थी कि तीन बार अपना आधा माल दीन तथा दुःखियों को बाँट दिया।

❖❖❖

जारी.............

फज़ाइले हज

—प्रस्तुतिः अब्दुल्लाह मतलूब नदवी

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया गया कि कौन सा अमल अफज़ल है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना फिर अर्ज़ किया गया इसके बाद कौन सा? फरमाया अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना फिर अर्ज़ किया गया इसके बाद कौन सा? फरमाया हज्जे मक़बूल।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उमरा दूसरे उमरा तक उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जो उनके दरमियान में सरज़द हों और हज्जे मबरूर की जज़ा नहीं है, मगर जन्नत इन दोनों हदीसों से हज्ज की फज़ीलत ज़ाहिर है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हाजी को जन्नत की खुशख़बरी दी है, हज्जे मबरूर वह हज्ज है जिसमें कोई गुनाह न हो और बाज़ का क़ौल है कि हज्जे मक़बूल का नाम हज्जे मबरूर है, और बाज़ उलमा कहते हैं कि जिसमें रिया और नाम व नमूद न हो वह हज्जे मबरूर है, और बाज़ कहते हैं जिसके बाद गुनाह न हों, हसन बसरी रह0 फरमाते हैं कि हज्जे मबरूर वह है कि हज्ज करने के बाद दुन्या से बे तवज्जुही और आख़िरत की तरफ़ रग़बत पैदा हो जाये।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस शख़्स ने महज़ अल्लाह की खुशनूदी के लिए हज किया और जिमाअ़ और उसके तज़किरे और गुनाह से महफ़ूज़ रहा तो वह (पाक हो कर) ऐसा लौटता है जैसा मां के पेट से पैदा होने के रोज़ पाक था।

इस रिवायत से मालूम हुआ कि अगर हज ख़ुलूस के साथ किया जाये और अहराम बांधने के वक़्त से हज्ज के मम्नूआत से इजतिनाब किया जाए और कोई गुनाह न किया जाए तो उस से इन्सान के सब गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं मगर कबीरा गुनाह के मुआ़फ होने में इख़्तिलाफ है। हज एक फर्ज है और उसकी अदायगी हमारे जिम्मे है लेकिन यह हक़ तआ़ला का एहसान है कि न सिर्फ हमको फरीज़ा से फारिगुज़्ज़िम्मा कर दिया

जाता है बल्कि साथ ही साथ हमारे गुनाह भी बख़्श दिये जाते हैं और दायमी सुरूर व राहत से नवाज़ दिया जाता है और जन्नत की खुशखबरी सादिक़ व मसदूक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक से भी दी जाती है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जो हाजी सवार हो कर हज करता है उसकी सवारी के हर क़दम पर सत्तर नेकियां लिखी जाती हैं और जो हज पैदल करता है उसके हर क़दम पर सात सौ नेकियां हरम की नेकियों मे से लिखी जाती हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया गया कि हरम की नेकियां कितनी होती हैं? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया एक नेकी एक लाख नेकियों के बाराबर होती है।

अल्लाहु अकबर बारी तआ़ला का किस क़दर फ़ज़्ल व एहसान है कि इस क़दर नेकियां और सवाब अ़ता फ़रमाते हैं, सहाबा और ताबिईन बावजूद अपनी मशग़ूलियत के कसरत से हज करते थे। बाज़ तो हर साल हज करते थे, इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा रह0 ने पचपन हज किये हैं।

❖❖❖

उमरा, हज और ज़ियारत......

मदीना मुनव्वरा से रुख़सत हों, अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपके तअ़ल्लुक़ और महब्बत को ज़ियादा करे और आप को सुन्नतें मज़बूती से पकड़ने की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

अहम बातः–

औरतें हैज़ की हालत में उमरे या हज के एहराम की नीयत करेंगी अलबत्ता वह न नमाज़ पढ़ेंगी न तिलावत करेंगी न किसी मस्जिद में दाख़िल होंगी।

पाक साफ़ हो कर गुस्ल करने के बाद ही हरम में दाख़िल हों और तवाफ़ व सई करके अपना उमरा पूरा करें, तवाफे ज़ियारत 12 ज़िलहिज्ज की मग़रिब से पहले कर लेना ज़रूरी है लेकिन औरत अगर हैज़ से हो तो हैज़ से पाक हो कर ही तवाफ़ करेगी और उसके लिए 12 ज़िलहिज्ज के बाद तवाफ़ करने की इजाज़त है।

एक और अहम बातः–

मिना, अरफ़ात, मुज़दल्फ़ा में क़स्र या पूरी नमाज़ पढ़ने में लोग अलग अलग राय रखते हैं अगर आप आलिम नहीं हैं तो वहां जिस जानकार पर भरोसा हो उसके अनुकूल सब नमाज़ें जमाअ़त से अदा करें झगड़े में न पड़ें भूल चूक मुआफ़ करने वाला और नमाज़ों को क़बूल करने वाला अल्लाह है।

❖❖❖

''सृष्टि के रचियता अल्लाह''

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 के पास ख़लीफ़ा का दूत आया और बड़े अदब से बोला, हज़रत! ख़लीफ़ा ने आपको याद किया है। इमाम साहब ने कहा, भाई! मैं तो जुहर (दोपहर) की नमाज़ पढ कर आऊँगा। दूत ने कहा, नहीं, हज़रत! अभी चलें बहुत ज़रूरी बात है। इमाम साहब ने पूछा कि ऐसी क्या बात है? दूत ने कहा कि दरअसल एक नास्तिक दरबार में आ बैठा है और वह दावा कर रहा है कि ये दुन्या बस यूं ही अस्तित्व में आ गई है और उसका बनाने वाला रब एक कोरी कल्पना है, तथा उसकी ज़िद है कि उसे ऐसे व्यक्ति से बहस करने दिया जाए जो बहुत बड़ा विद्धान हो। ख़लीफ़ा ने उससे ही पूछा कि तुम्हीं बताओ कि तुम किससे बहस करना चाहते हो? उसने कहा, इस समय तो इमाम अबू हनीफ़ा बड़े आलिम और विद्धान हैं, उनको निरुत्तर कर उनके शुभचिन्तकों और शिष्यों का मुँह बन्द करना चाहता हूँ।

इमाम साहब पूरी बात सुन कर मुस्कुराए और दूत से कहा, अच्छा चलो और ख़लीफ़ा से कहना कि मैं अभी आया, मेरी प्रतीक्षा करें। दूत उत्तर सुन कर लौट आया और खलीफ़ा तक बात पहुंचा दी।

इधर ख़लीफ़ा, दरबारी और नास्तिक व्याकुलता से इमाम साहब की प्रतीक्षा कर रहे थे। इन्तेज़ार करते—करते लोग थकने लगे। उधर ख़ुदा का ये इन्कारी बार—बार कहता कि अरे! इमाम साहब नहीं आएंगे। मैं कहता न था कि वह मुझ से बहस में जीत नहीं पाएंगे, इसी डर से वह यहां नहीं आ रहे हैं। अंततः बड़ी देर बाद इमाम साहब दरबार में आते दिखाई दिये, इन्कारी का मुँह सूखने लगा और ख़लीफ़ा व दरबारी के चेहरे चमक उठे।

जब इमाम साहब निकट आए तो ख़लीफ़ा ने उन्हें ससम्मान बैठाया और विनम्रता पूर्वक पूछा कि हज़रत! आने में इतनी देर क्यों लगा दी? इमाम साहब ने कहा, आप तो जानते ही हैं कि मैं दज्ला नदी के पार रहता हूँ। इधर आने के लिए तैयार हो कर निकला और

नदी के तट पर आया तो देखा कि उस पार जाने के लिए कोई नाव नहीं है। मैं बड़ी देर तक प्रतीक्षा करता रहा कि कोई आए और मुझे पार उतार दे। तभी मैं देखता हूं कि लकड़ी का एक तख़्ता बहता हुआ तट पर आ लगा। थोड़ी देर में कई तख्ते एक ही स्थान पर जमा हो गए और फिर क्या देखता हूं कि वह तख़्ते स्वयं ही एक दूसरे से जुड़ गये और तुरन्त एक नाव तैयार हो गई। कश्ती को तैयार देख कर मैं उसमें जा बैठा, क्या देखता हूं कि वह नाव बिना खेवनहार के स्वयं चलने लगी और मुझे नदी पार उतार दी।

जब नास्तिक ने ये बातें सुनीं तो चिल्ला उठा कि भाईयो। इमाम साहब इतने बड़े विद्वान हैं, क्या इनके मुँह से ऐसी बेतुकी बेवकूफी वाली बात शोभा देती है? क्या ये बात किसी की समझ में आ रही है?

इस पर इमाम साहब ने कहा, अरे मूर्ख! फिर ये बात तेरी बुद्धि में कैसे आई कि इतना बड़ा ब्राह्माण्ड बिना कसी के बनाए कैसे अस्तित्व में आ गया और चल रहा है? या तो नाव वाली बात सच मान ले या अपनी हटधर्मी से बाज़ आ जा। ये बात सुन कर वह नास्तिक अपना सा मुँह ले कर दरबार से चलता बना।

इमाम साहब की बात ने आस्तिकता और नास्तिकता का निर्णय कर दिया। सीधी सी बात है कि जब एडीसन ने बल्ब बनाया, ग्राहम बेल ने फोन बनाया, जेम्स वाट ने रेल इंजन बनाया तो इतना बड़ा ब्राह्माण्ड भी कोई बनाने वाला होगा। हालांकि जिन लोगों ने इंजन, फोन और बल्ब बनाया उन्होंने भी अल्लाह की बनाई हुई मिट्टी, पानी, हवा, आग, सूरज के प्रकाश आदि से ही ये चीजें बनाई हैं। उन्हें जीविका प्रदान करने वाला अल्लाह है। कितनी हास्यास्पद बात है कि नास्तिक सांसारिक वस्तुओं के आविष्कारकों के नाम याद रखते हैं मगर जब क़ायनात और सृष्टि के रचियता (अल्लाह) की बात की जाती है तो उसका इन्कार कर जाते हैं।

❖❖❖

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: मीक़ात किसे कहते हैं?

उत्तर: मक्का मुकर्रमा के बाहर चारों तरफ़ काफी फासले पर कुछ मक़ामात मुकर्रर हैं, हज या उमरा करने वाले जब अपने मुल्क से मक्के की तरफ चलते हैं तो एहराम के बगैर उन मक़ामात या उनकी सीध से आगे नहीं जा सकते यानी एहराम के बगैर उनके आगे जाना मना है।

प्रश्न: मीक़ातों का तआरुफ कराइये?

उत्तर: पाँच मक़ामात मीक़ात के लिए मुकर्रर हैं।

1. यलमलमः— यह हिन्दोस्तान और पाकिस्तान की तरफ़ से आने वालों के लिए मीक़ात थी लेकिन यह मीक़ात पानी के जहाज़ के रास्ते में पड़ती थी, हवाई रास्ते में यह मीक़ात नहीं पड़ती है लिहाजा हिन्दोस्तान और पाकिस्तान के उमरा करने वालों या हज करने वालों को चाहिए कि अपने एयरपोर्ट ही पर एहराम बांध लें, अगरचे हवाई जहाज़ वाले जद्दा पहुंचने से पहले मीक़ात का एलान करते हैं लेकिन मालूम नहीं कि किस मीक़ात की सीध का लिहाज करके एलान करते हैं, फिर हवाई जहाज़ जरा देर में कहां से कहां पहुंच जाता है ऐसा न हो कि मीक़ात निकल जाये और आप एहराम में न हों लिहाजा अपने एयरपोर्ट ही पर एहराम बांध लें, मीक़ात से पहले एहराम बांधना दुरुस्त है।

2. जुल हुलैफ़ाः— यह मदीना तय्यिबा की तरफ से आने वालों की मीक़ात है।

3. ज़ातेइर्कः— यह कूफ़ा, बसरा और बग़दाद की तरफ़ से आने वालों की मीक़ात है।

4. जुह़फाः— यह तुर्की और शाम की तरफ़ से आने वालों की मीक़ात है।

5. क़र्नुल मनाज़िलः— यह नज्द वालों और उनकी तरफ से हज या उमरे के लिए आने वालों की मीक़ात है, यह मक्के से उत्तर पूरब लगभग सत्तर किलो मीटर फ़ासिले पर है मेरी समझ में हिन्दोस्तान से जद्दे के हवाई सफ़र में यही मीक़ात सब से करीब है।

दुन्या के दूसरे मुल्कों वाले उमरा या हज का सफ़र करें तो उनके रास्ते में इन मीक़ातों में से जो मीक़ात क़रीब पड़े उसकी सीध से पहले एहराम बांध लें।

प्रश्न: अगर उमरा करने वाला या हज करने वाला एहराम बांधे बगैर मीक़ात के अन्दर आ जाये तो क्या करे?

उत्तर: अगर उमरा या हज करने वाला एहराम के बगैर मीक़ात के अन्दर आ जाये तो उसके लिए ज़रूरी है कि वह मीक़ात पर लौट कर वहां एहराम बांध कर मीक़ात के अन्दर आये या फिर मीक़ात और हरम की हुदूद के बीच

शेष पृष्ठ...40 पर

हज़ के पाँच दिन

—इदारा

पहले यह समझें: अगर आप को 8 ज़िलहिज्ज को मक्के में ठहरे हुए 15 दिन या उससे ज़ियादा हो चुके हैं तो आप मुक़ीम हैं, आप मिना, अरफ़ात, मुजदल्फ़ा में पूरी नमाज़ें पढ़ेंगे, क़स्र न करेंगे इस सूरत में 10 ज़िलहिज्ज को आप पर माल वाली कुर्बानी भी वाजिब होगी। जिसे आप चाहें तो मिना में हज वाली कुर्बानी के साथ माल वाली कुर्बानी भी कर दें या फिर अपने मुल्क में अपने घर वालों को फोन वगैरह से माल वाली कुर्बानी करने को कहें याद रहे आपके कहे बग़ैर आपके घर वाले आपकी तरफ़ से कुर्बानी कर देंगे तो आप का वाजिब अदा न होगा।

लेकिन अगर आपको मक्के में ठहरे हुए 8 ज़िलहिज्ज तक 15 दिन से कम हुए हैं तो आप मुसाफिर हैं आप मिना अरफात और मुजदल्फ़ा में जुह्र, अस्र और इशा की फर्ज़ नमाज़ों में कस्र करेंगे।

सऊदिया के उलमा मिना अरफात और मुज़दल्फा में नमाज़ों में क़स्र करने का हुक्म देते हैं अगर कोई उस पर अमल करे तो उसको भी सही समझें।

अब आप ह़ज के पांच दिन के काम पढ़ें।

आठ ज़िलहिज़्ज: अगर आप ह़ज्जे इफराद या हज्जे क़िरान कर रहे हैं तो आप एहराम में हैं।

अगर आप तमत्तो कर रहे हैं तो आप उमरा करके हलाल हो चुके हैं आज गुस्ल करके सिले कपड़े अलग करके उमरे की तरह एहराम की चादरें पहन लें और बावज़ू दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर हज़ की नीयत करें ''ऐ अल्लाह मैं हज की नीयत करता हूं मेरे लिए हज करना आसान फरमा'' फिर सर खोल कर आवाज़ से लब्बैक पढ़ें।

औरतें भी इसी तरह नहा धो कर अपने मामूल के कपड़ों में बावुज़ू दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर इसी तर नीयत करके चेहरा खोल कर लब्बैक आहिस्ता से पढ़ें। औरत अगर हैज़ से हो तो वह भी वुज़ू करके नमाज़ पढ़े बग़ैर इसी तरह नीयत करके आहिस्ता लब्बैक पढ़े यह हैज वाली औरत हज के तमाम काम करेगी मगर तवाफ़े जियारत पाक होने के बाद करेगी। यह एहराम हज़ का पहला रुक्न (फ़र्ज़) है।

अब हज की इन्तिज़ामिया (हज प्रबन्ध समिति) आपको सवारी से मिना पहुंचायेगी आप अपने साथ एक बैग में अपना ज़रूरी सामान और कम से कम एक चादर रख लें, मिना में आप को खेमें में ठहराया जायेगा, आप वहां ज़ुह्र, अ़स्र, मग़रिब, इशा और 9 की फज्र की नमाज़ जमाअ़त से अदा करें, फज्र की नमाज़ के बाद तक्बीरे तशरीक़ ''अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, वलिल्लाहिल हम्द आवाज़ से

पढ़ें, औरतें आहिस्ता पढ़ें, यह तक्बीरें तेरह ज़िलहिज्ज की अ़स्र तक हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ना न भूलें। मिना में खाना, नाश्ता खरीद कर खाना पड़ता है।

नौ ज़िलहिज्ज: अब आप को इन्तिज़मिया सवारी से अरफात पहुंचायेगी, 9 ज़िलहिज्ज को अरफात की हाज़िरी हज़ का दूसरा रुक्न (फर्ज़) है।

याद रखें आप एहराम में हैं खूब लब्बैक पढ़ें और एहराम की पाबन्दियों का लिहाज़ रखें यानि मर्द सर न बन्द करें, सिले कपड़े न पहनें, बनयान, अण्डरवियर और मोजे भी नहीं पहन सकते, औरतें चेहरा खुला रखें कोई अजनबी सामने आ जाये तो पंखे वग़ैरह से आड़ ले सकती हैं, बाल मूँडना या कतरना, या उखाड़ना, नाखुन काटना, साँप, बिच्छू छोड़ कर किसी भी जानवर को मारना यहां तक कि जुएं और चीलरों का मारना सब मना है, औरत से मिलाप सख़्त मना है, औरत से ऐसी बातें करना जिनसे शहवत उभरे मना है ख़ुशबू लगाना मना है, लड़ाई झगड़ा और तमाम गुनाहों से बचना ज़रूरी है। अरफ़ात में ज़ुह्र के वक़्त जमाअ़त से ज़ुह्र की नमाज़ पढ़ें फिर फौरन अस्र की नमाज़ भी पढ़ लें, ख़ुदा न करे जामअ़त छूट जाये तो ज़ुह्र की नमाज़ ज़ुह्र के वक़्त में और अ़स्र की नमाज़ अ़स्र के वक़्त में पढ़ें, वहां खाना इन्तिज़ामिया की तरफ़ से मिलता है, मगर उसमें बड़ी अफरा तफरी होती है, बहर हाल खाना हासिल करके खाना खा कर दुआ़ओं में लग जाएं खूब दुआ़एं करें दुरूद शरीफ़ पढ़ें, ऐसा मौक़ा फिर कहाँ? मग़रिब का वक़्त आ जाने पर वहां मग़रिब न पढ़ें, अब आप को इन्तिज़ामिया सवारी से मुज़दल्फ़ा पहुंचायेगी, अरफ़ात में तो खेमा मिला था मुज़दल्फ़ा में ख़ेमा न मिलेगा, लातादाद (बड़ी संख्या) में पक्के फुटपाथ की तरह बने हुए हैं उनमें जहां जगह मिल जाये अपने कुछ साथियों के साथ क़ियाम करें। चादर बिछा लें और वुज़ू करके जमाअ़त से मग़रिब पढ़ें और उसी इक़ामत से इशा पढ़ें, मुज़दल्फ़ा की रात बड़ी बरकत वाली रात है लब्बैक पढ़ें, दुआएं करें, दुरूद शरीफ़ पढ़ें, और सो भी लें, फज्र की नमाज़ पढ़ कर थोड़ा रुकें यह मुज़दल्फा का वकूफ़ है। यह वाजिब है यह सूरज निकलने से पहले फज्र के वक़्त में वाजिब है। अब मिना वापसी की तैयारी करें, रमी के लिए कम से कम 49 छोटी–छोटी कंकरियां चुन कर रमी के लिए महफ़ूज़ कर लें।

दस ज़िलहिज्ज:

आज आपको मिना के ख़ेमे में वापस आना है, भीड़ इतनी होती है कि सवारियों को रास्ता नहीं मिलता, इन्तिजामिया सवारियों का इन्तिज़ाम नहीं कर पाती,

लोग पैदल मिना आते हैं, माज़ूर लोग भीड़ कम होने पर सवारियों से मिना आते हैं। मिना पहुंच कर आप सात कंकरियां ले कर जमरात जाएं और वहां जम–रए–अ़क़्बा (बड़े शैतान) के पास पहुंच कर लब्बैक कहना बन्द कर दें और एक एक करके सातों कंकरियां बड़े शैतान को मारें, हर कंकरी मारते वक़्त, बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर पढ़ें, कंकरियां मार कर दुआ़ करें, कंकरियां मारने के लिए वहां जो क़ाइदे मुक़र्रर हैं उनका लिहाज़ ज़रूर करें ताकि किसी हादसे का ख़तरा न पैदा हो कंकरियां मार कर मिना वापस आयें और मनहर जा कर कुर्बानी करें, आजकल अकसर लोग मनह़र नहीं जाते और किसी जमाअ़त या बैंक के ज़रिये कुर्बानी करवाते हैं, जब आपको इत्मिनान हो जाए कि कुर्बानी हो गयी होगी तो आप सर मुंडा दें या बाल कतरवा दें, ख़ेमे में सर मुंडाने का मसअला बड़ा मुश्किल होता है साथ में ब्लैड मशीन और ब्लैड रखना चाहिए और एक दूसरे का उसी मशीन से सर मूंड दें। औरतें साथ में कैंची रखें और अपनी चोटी से एक अंगुल बाल काट दें या किसी औरत से कटवा लें, अब आप नहा धो कर मामूल के कपड़े पहन कर तवाफ़े ज़ियारत के लिए ह़रम जायें, वहां पहुंच कर उमरे की तरह तवाफ़ करें। अगर आप कपडे न बदले हों, एहराम की चादरों में ही हरम गये हों तो तवाफ करते वक़्त इज़्तिबाअ़ करें यानी ऊपर की चादर दाहिने कंधे के नीचे से निकाल कर बायें कंधे पर डाल लें और सातों चक्करों में यही शक्ल रहे तीन चक्करों में रमल भी करें यानी ज़रा अकड़ अकड़ कर चलें यह इज़्तिबाअ़ और रमल सिर्फ मर्दों के लिए मस्नून हैं, अगर आप आम लिबास में हों तो सिर्फ रमल करें तवाफ पूरा करके दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें यह वाजिब है, यह तवाफ ज़ियारत हज़ का तीसरा रुक्न (फर्ज़) है, अब ज़मज़म पी कर सई करें यानी सफ़ा और मरवा के बीच सात चक्कर लगायें, यह चक्कर सफा से शुरु हो कर मरवा पर ख़त्म होगा, तवाफ़ व सई में खूब दुआ़यें करें, अब अपनी क़ियाम गाह वापस आयें।

ग्यारह ज़िलहिज्जः

आज ज़ुह्र की नमाज़ के बाद 21 कंकरियां ले कर जमरात जायें और जम–रए–ऊला (छोटे शैतान) के पास पहुंच कर एक एक करके कल की तरह सात कंकरियां मारें फिर थोड़ा हट कर दुआ़ करें और जम–रए–वुस्ता (मंझिले शैतान) को एक एक करके सात कंकरियां मारें फिर थोड़ा हट कर दुआ करें और जम–रए–अ़क़्बा बड़े शैतान के पास पहुंच कर पहले की तरह एक एक करके सात कंकरियां मार कर क़ियामगाह वापस आयें।

बारह ज़िलहिज्जः

आज फिर कल की तरह ज़ुह्र की नमाज़ के बाद 21 कंककरयां ले कर जमरात जायें और कल की तरह

पहले छोटे शैतान को फिर मंझिले को फिर बड़े को कल की तरह एक एक करके सात–सात कंकरियां मारें।

वहां उलमा इन्तिज़ामन ग्यारह, बारह ज़िलहिज्ज को ज़ुह्र से पहले कंकरियां मारने यानी रमी करने की इजाज़त देते हैं, जान के ख़तरे से बचने के लिए ऐसा करना दुरुस्त है।

अब आप क़ियामगाह आ कर मिना से मक्के की कियामगाह जाने की तैयारी करें और मग़रिब से पहले पहले मिना छोड़ दें, आज भी भीड़ के सबब इन्तिज़मिया सवारीका इन्तिज़ाम नहीं कर पाती लोग पैदल वापस होते हैं या खुद से सवारी का नज़्म करते हैं।

आप का हज़ पूरा हो गया अब आप घर वापसी का इन्तिजार करें और वापसी से पहले तवाफे वदाअ़ करें यह तवाफ वाजिब है। आप का हज़ पूरा हुआ अल्लाह तआ़ला कबूल फरमाये।

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी......

इसी बात को एक हदीस में उदाहरण दे कर बयान किया गया है। कहा कि ''मेरी उस दावत व हिदायत की मिसाल जिसके साथ मुझे दुन्या में भेजा गया है, ऐसी है जैसे एक व्यक्ति ने आग जलाई, जब उसकी रौशनी आस–पास फैली तो वह परवाने और कीड़े जो आग पर गिरा करते हैं, हर तरफ़ से उमड़ कर उस में कूदने लगे, इसी तरह से तुम आग में गिरना और कूदना चाहते हो, और मैं तुम्हारी कमर पकड़ कर तुमको उससे बचाना और अलग करना चाहता हूँ''। (सही बुखारी व मिश्कात भाग–1 पेज 28)

वास्तव में असल समस्या यही थी कि मानव जाति की नौका को सलामती के साथ, सकुशल पार लगाया जाये। जब इन्सान अपने सही ''मूड'' में आ जायेगा, जब जीवन में नार्मल (साधारण) हालात पैदा हो जायेंगे, तो उन सब रचनात्मक, कल्याणकारी, ज्ञानमयी साहित्यिक और विकास के प्रयासों और मंसूबों का दौर आयेगा जिनकी योग्यता अनेक इन्सानों और मानवता के शुभ चिन्तकों में पायी जाती है। वास्तव में सारी दुन्या पैग़म्बरों की एहसानमन्द है कि उन्होंने मानव जाति को उन ख़तरों से बचा लिया जो उसके सर पर नंगी तलवार की तरह लटक रहे थे। दुन्या का कोई ज्ञानमयी, रचनात्मक, सुधारात्मक कार्य, कोई दर्शनशास्त्र, कोई विचार धारा उनके एहसान से ख़ाली नहीं। सच पूछिये तो दुन्या अपने अस्तित्व, विकास और जीवन की हक़दारी में पैगम्बरों ही के प्रति आभारी है। इन्सानों ने अपनी दशा से कई बार यह एलान किया कि अब उनकी उपादेयता समाप्त हो गयी और अब वह दुन्या के लिए कोई लाभ बरकत व रहमत और कोई पैग़ाम और दावत नहीं रखते। उन्होंने अपने खिलाफ़ ख़ुदा की अदालत में ख़ुद नालिश (शिकायत) की और गवाही दी और वह अपने को बड़ी से बड़ी सज़ा बल्कि मृत्युदण्ड का पात्र साबित कर चुके थे।

जारी..........

❖❖❖

आह! प्रिय भ्राता आचार (आलिमे दीन) वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह०

जन्म 1352 हि0 (1933 ई0) वफ़ात 1440 हि0 (2019 ई0)

—हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

प्रिय भ्राता आलिमे दीन सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (मुहम्मदुल—खामिस) मौलाना सय्यिद खलीलुद्दीन हसनी मरहूम (वफात 1332 हि0) के पोते और हज़रत मौलाना सय्यिद अब्दुल हयी हसनी रह0 (भूत पूर्व नाज़िम नदवतुल उलमा, वफात 1923 ई0) के नवासे हैं, तक्या कलां दायरा शाह अलमुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि, रायबरेली में 20 नवम्बर 1933 ई0 (3 शाबान 1352 हि0) में पैदा हुए।

प्रारंभिक शिक्षा घर में अपने फूफ़ा मौलाना अज़ीज़ुर्रहमान हसनी मरहूम से और अपनी खाला सय्यिदा अमतुल्लाह तस्नीम से पाई, दूसरी ओर नानी साहिबा सय्यिदा खैरुन्निशा बेहतर मरहूमा की ममता तथा प्रशिक्षण मिला और फिर मदरसा इलाहिया शहर रायबरेली में प्रवेश लिया जहां परिवार के हमजोलियों के साथ कुछ कक्षाओं में पढ़ा, और माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा दारुलउलूम नदवतुल उलमा में प्राप्त की, आलिमीयत के पश्चात अदब में तखस्सुस किया और बैअ़त व इरादत का संबन्ध हज़रत मौलाना शाह अब्दुल कादिर रायपूरी रह0 से स्थापित किया, और उनकी खिदमत में 1952 ई0 में "मसूरी" का रमज़ान गुज़ारा, और उनके पश्चात दीनी व रूहानी सरपरस्ती हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया कान्धिलवी रह0 से हासिल की जिनके खुतूत का मुअ़तदबेह तादाद (पर्याप्त संख्या) उनके पास सुरक्षित रही, इल्मी व फिक्री और दावती तरबीयत आपने अपने बड़े मामूँ हज़रत मौलाना डॉक्टर सय्यिद अब्दुल अली हसनी साबिक नाज़िम (भूत पूर्व प्रबन्धक) नदवतुल उलमा और दूसरे मामूँ हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी से हासिल की, बड़े भाई मौलाना सय्यिद मुहम्मद सानी हसनी रह0 की फिक्र व तवज्जो भी प्राप्त हुई।

1953 ई0 से 1973 ई0 तक देहली में निवास रहा, फिर दारुल उलूम नदवतुल उलमा में तदरीसी खिदमात (शिक्षण सेवाएं) देने लगे, इसी साल बैतुल्लाह शरीफ का सफर अपने मामूं हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी के साथ किया, और हज किया और उस मीटिंग में भी शिरकत की जिसमें शाह फैसल बिन अब्दुल अज़ीज़ मरहूम बादशाह सऊदी अरब की सरबराही (नेतृत्व) में आलमे इस्लाम की सर—बर आवुरदा शख्सीयतों ने (उच्च कोटि के लोगों ने) शिरकत की थी, इसके अतिरिक्त मुत्तहिदा अरब इमारात, मिस्र, तुर्की, बरतानिया, अरदुन, यमन, कोयत, पाकिस्तान, बंगाल

देश, नेपाल आदि के अहम इल्मी, अदबी और दावती सफर किये और आलिमी राबि–तए–अदबे इस्लामी की तासीस (स्थापना) 1984 ई0 के वक़्त से उस के रुक्न (सदस्य) और मजलिसे उमना के सदस्य चुने गये और फिर नाइब सिक्रेट्री और मुमालिके शरकीया (पूर्वी देशों) के सिक्रेट्री नियुक्त हुए, 1982 ई0 में मदरसा फलाहुल मुस्लिमीन रायबरेली के नाज़िम (प्रबन्धक नियुक्त हुए तथा 2006 ई0 में दारुल उलूम नदवतुल उलमा के मुअ़तमद तालीम नियुक्त हुए और ताहयात उस मन्सब पर फाइज़ रहे।

जहां तक मेरे और मेरे भाइयों के शिक्षण तथा प्रशिक्षण का संबन्ध है, यह वह समय था जब दीनी तालीम से उमूमी बे तवज्जुही और गफलत थी, लोग मगरिबी निज़ाम (पाश्चात्य व्यवस्था) की ओर लपक रहे थे या शिक्षा पर जड़त को वरीयता दे रहे थे और फिर कम्यूनिज्म के असर की वजह से दीन और दीनी तालीम का और दीन वालों का तमस्खुर (खिल्ली उड़ाना) आम बात थी, अपने मामूँ का खालिस दीनी तर्ज़े निज़ामे तालीम व तरबीयत था, इन हालात में मेरे वालिदैन ने मआशी ज़रूरतों के बावजूद हम लोगों के लिए खालिस दीनी तर्ज़े जिन्दगी (जीवन प्रणाली) इख्तियार करने की हिम्मत की जब कि दीनी तालीम को दुन्यावी एतिबार से नाकामी की अलामत समझा जाता था, वालिदे माजिद (मेरे पिता) सय्यिद रशीद अहमद हसनी मरहूम सुनने और बोलने की योग्यता न होने के कारण अपनी सन्तान की अच्छी आय के विषय में सोच सकते थे और हर बाप अपनी सन्तान के भविष्य की सफलता का इच्छुक होता है और अगर कुछ विवशता हो तो यह इच्छा और बढ़ जाती है लेकिन उन्होंने इस की परवाह नहीं की और दीनी तालीम जो उस ज़माने में दुन्यावी एतिबार से नाकामी की अलामत समझी जाती थी, अपनी औलाद को उनके मामूं मौलाना डॉक्अर सय्यिद अब्दुल अली हसनी रह0 जो कि उस वक़्त नदवे के नाज़िम और उनके बे तकल्लुफ व हम उम्र थे, और दूसरे मामूं मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी जो उस वक़्त दारुल उलूम नदवतुल उलमा के अहम उस्तादों में थे, उनके इख़्तियार में दे दिया, इस तरह मुझ को और मेरे भाइयों को दीनी तालीम की राह इख्तियार करने की सआदत मिली, और वालिद साहिब हम लोगों से विशेष कर यह भी कहते थे कि अली यानी मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी को नमूना बनाना, अर्थात उन जैसे बनना, वालिदा माजिदा यय्यिदा अमतुल–अज़ीज़ मरहूमा दिल से दुआएं मांगती थी और उनकी फिक्र ज़ियादातर अपनी औलाद की दीनी तरक़्क़ी व काम्याबी सलाह व नेक शुहरत की रहती, माल व दौलत और दुन्यावी लाभ की अधिक प्राप्ति उनकी नज़र में वरीयता की बात न थी,

उनको अपने माँ बाप के घर में इसी तरह की तरबीयत मिली थी। बहुत महब्बत और तअल्लुक के बावजूद किसी ग़लत काम में पड़ जाने पर सख़्त अन्दाज़ इख़्तियार करतीं (बड़ी क्रोधित होतीं) किसी के साथ ज़ियादती करने या बड़ों की इताअत में कोताही पर रहम व महब्बत का जज़्बा जाहिर न होता और कोई अज़ीज़ किसी ग़लती पर उनको तंबीह करता तो उस पर ज़रा भी ना पसन्दीदगी जाहिर न करतीं। एक बार प्रिय भाई वाज़ेह मरहूम को उनके एक उस्ताद ने थोड़ा ज़ियादा मारा जिससे उनको ज़ख्म हो गया, लेकिन उन्होंने ज़रा भी नागवारी जाहिर न होने दी और उसको तरबीयत की मसलहत समझा (प्रशिक्षण के हित में जाना) खुद वाज़ेह मरहूम के अन्दर यह सआदत मन्दी (सदाचारिता) और वालिदैन की बाज़ मरतबा सजा या डाँट पर भी उनको अपने लिए भलाई की बात लगी और उससे उनके अन्दर तअल्लुक में और इज़ाफा हुआ। प्रेम और बढ़ गया, वालिदैन और असातज़ा के साथ इस स्वभाव से उनके ज्ञान तथा आचार में बड़ी उन्नति प्रदान हुई।

हम लोगों के लिए यह खुश नसीबी की बात थी कि उस दौर में हमारे वालिदैन ने हमें खालिस दीनी माहौल के हवाले किया जब कि दीनी तालीम की तरफ़ जाने वाले को दुन्यावी लिहाज से बिल्कुल नाकाम और दुन्यावी वसाइल (साधनों) से महरूम (वंचित) हो जाने वाला समझा जाता था। यह दुन्यावी लिहाज़ से वह कुर्बानी थी जो माँ–बाप के लिए ऐसे हालात में आसान न थी, फिर जब कि ज़रा आमदनी कम और तंगी थी और उन के बड़े बेटे यानी हम भाइयों में सबसे बड़े भाई सय्यिद महमूद हसन मरहूम बहुत बीमार रहते थे और फिर ऐन जवानी 21 साल की उम्र में 1942 ई0 में उन की वफ़ात हो गई थी, उस वक़्त उनसे छोटे और मुझ से बड़े भाई मौलाना सय्यिद मुहम्मद सानी हसनी 17 साल के थे और नदवे में पढ़ रहे थे, मेरी उम्र 13 साल की थी और अजीजी वाज़ेह मरहूम की उम्र 9 साल या उससे कम थी। फिर दो साल के बाद मेरे बड़े भाई मौलाना मुहम्मद सानी हसनी नदवे से तालीम पूरी करके मजाहिरे उलूम सहारनपुर चले गये और अज़ीज़ी वाज़ेह रशीद मरहूम रायबरेली से लखनऊ आ गये और जब नदवे में दाखिला लिया तो उन की उम्र सिर्फ 11 साल थी और आरम्भ में ही उनको जामे अजहर से आये हुए दो मुम्ताज़ उस्ताद मौलाना इमरान खां नदवी अज़हरी और मौलाना महबूबुर्रहमान अज़हरी मिले, जो अरबी बोल चाल के साथ जदीद तर्ज़ (आधुनिक शैली) में तालीम देते थे जिस का उन को बड़ा फ़ायदा हासिल हुआ। और उनकी बुन्याद मज़बूत हो गई जिसने आखिर तक उनको बहुत फायदा पहुंचाया।

कुर्आन मजीद, हदीस शरीफ़ और फ़िक़्ह की

तालीम भी मुम्ताज़ असातज़ा से प्राप्त की और दूसरे उलूम व फ़नून में भी उन्हें माहिर उस्ताद मिले, मामूं हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी ने उनके लिए मुताले का एक चार्ट बनाया था, और उनकी निगरानी में उन्होंने विभिन्न उलूम व फुनून की अहम किताबें और फ़िक्रे इस्लामी व तारीख का अच्छा मुताला (मुता–लअ़) किया था। उसके साथ उन्होंने अंग्रेज़ी की अच्छी सलाहियत पैदा की थी, और उसके लिए मुस्लिम युनिवर्सिटी अलीगढ़ में इम्तिहान भी दिया था और अच्छे नम्बर हासिल किये थे, उन को अपनी इस जामिईयत का फाइदा देहली में आलइण्डिया रिडियो से वाबस्तगी में खूब मिला और अरबी देशों और मुस्लिम देशों की मुम्ताज़ शख्सीयात (उच्च कोटि के लोगों) से जारी रखा और उच्च श्रेणी के सम्मान प्राप्तिजनों से भेंट तथा विचारों के आदान प्रदान के अच्छे अवसर मिले उन्होंने अपने आधुनिक ज्ञान का अध्ययन जारी रखा और अपने मुआ़सिर (समकालीन) उलमा में उस नाहिया (दुष्टिकोण) से तफव्वुक़ (उच्चता) प्राप्ति की जिस का उन्होंने आधुनिक पत्रकारिता में अपनी योग्यता से खूब काम लिया। उनकी इस योग्यता ताथा गुण को देखते हुए मामूं जान हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी उन को अपने बाज़ मुस्लिम देशों और अरबी देशों के सफ़र में अपने साथ ले गये। उनमें पाँच देशों (अरदुन, यमन, सऊदी अरब, कोयत और पकिस्तान) का एक अहम सफर था जो बड़ा यादगार सफ़र रहा जिसमें (मुस्लिम देशों) तथा अरब देशों के उच्चकोटि तथा चुने हुए सज्जनों को करीब से देखने और उनसे लाभ उठाने का अवसर मिला, सऊदी अरब में शाह फ़ैसल शहीद से एक अहम मुलाक़ात में भी व साथ रहे थे और शैखुल अज़हर शैख अब्दुल हलीम महमूद की दावत पर उन का और उनके साथ मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी का नदवतुल उलमा की तरफ़ से एक अहम सफ़र 1978 ई0 में हुआ था, जिसमें मिस्र की बड़ी अहम दीनी, इलमी, सियासी और तहरीकी शख्सीयात से मिलने और तबादि–लए–ख्यालात और मुलाक़ात के अच्छे मवाके मिले थे। उनका यह सफर सऊदी अरब के रास्ते हुआ था वहां भी मम्लकत की अहम सियासी, दीनी, इल्मी और दावती शख्सीयात से मुलाकातें की थीं और आलमे इस्लाम के क़ज़ाया (समस्याओं) पर तबादि–लए –ख्यालात (विचारों का आदान प्रदान) किया था। राबि–तए–अदबे इस्लामी आलमी के स्थापना के समय वह उसके अहम रुक्न (महत्वपूर्ण सदस्य) और उसकी मज्लिसे उमना के सदस्य भी थे और जब उसके लिए 1404 हि0 (1984 ई0) में मक्का मुअ़ज़्ज़मा हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 की खिदमत में सऊदी अरब की मुख्तलिफ युनीवर्सिटियों के

उच्च कोटि के विद्वान तथा साहित्यकार इस विचार को इल्मी जामा पहनाने के लिए जमा हुए तो वह भी इस मजलिस में थे और उससे पहले 1401 हि0 (1981 ई0) में नदवतुल उलमा में बैनल अक्वामी तालीमी मुजाकि–रए–अदबियाते इस्लामी का इनइक़ाद हुआ, विश्व स्तर पर इस्लामिक साहित्य से सम्बन्धित अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन हुआ तो उसमें उन का अहम किरदार रहा, और वह उसकी प्रस्ताविक कमेटी के मिम्बर थे। इसके अलावा 1977 ई0 में मक्का मुअ़ज़्ज़मा में बैनल अक्वामी तालीमी कांफ्रेन्स में, जिसका राबि–तए–आलमे इस्लामी मक्का मुअज़्ज़मा ने इनइक़ाद किया था, उन्होंने अहम मक़ाला (मुख्य लेख) के साथ शिरकत की थी और राबि–तए–अदबे इस्लामी के सभी सेमीनारों और कांफ्रेन्सों में वह बड़े जज़्बे और फ़िक्रमन्दी के साथ न सिर्फ शिरकत करते थे बल्कि दूसरों को भी आमादा करते और नौजवानों को भी आगे करने की फ़िक्र करते और उनको काम सिपुर्द करते, मकाला (लेख) भी लिखवाते और जब हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी की वफात के बाद शो–बए–बर्रेसगीर (उप महाद्वीप) की निगरानी की ज़िम्मेदारी उनके सिपुर्द हुई तो उनकी तवज्जुह और बढ़ गई थी, आखिरी सेमीनार जिसमें उन्होंने शिरकत की वह भटकल का था जो राबि–तए–अदबे इस्लामी के बानी सद्र हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी की इल्मी, अदबी व दावती खिदमात और कारनामों पर मुनअ़क़िद (आयोजित) हुआ था जिसमें बैनल अक्वामी नुमायन्दगी (प्रतिनिधित्व) थी और यह बहुत काम्याब सेमीनार था, उसके बाद एक अहम सेमीनार ''बच्चों के अदब'' पर मौलाना सिराजुद्दीन नदवी की ख्वाहिश पर बिजनौर में हुआ जिस की उन्होंने मन्जूरी दी थी लेकिन वह अपनी कमज़ोरिये सिह़त की वजह से और मैं भी शिरकत से माज़ूर रहा था और उसके बाद दो महीने का अर्सा ही गुज़रा कि वह अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिले।

देहली के क़ियाम (निवास) का ज़माना उनके लिए बाज़ हैसीयतों से मुफीद हुआ जहां उन्हें अहले दीन व दावत से इस्तिफ़ादे का (लाभ उठाने का) अच्छा मौक़ा मिला था और सहारनपुर क़रीब होने की वजह से हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कान्धिलवी रह0 की ख़िदमत में बराबर हाज़िरी की सआ़दत कुछ कुछ वक़्फे से होती रही और उसकी वजह से उनकी उन्हें अच्छी तवज्जु और रहनुमाई मिलती रही और उन्हीं के मश्वरे से दिल्ली का बीस साला कियाम तर्क कर के लखनऊ का कियाम और नदवतुल उलमा से वाबस्तगी 1973 ई0 से इख्तियार की, जहां उन्हें तदरीसी मशगूलीयत के साथ दावती मशगूलीयत भी मिली और ''अलबासुल

इस्लामी'' और ''अर्राइद'' के ज़रिये उनको सही दीनी फिक्र को दूर दूर तक पहुंचाने का मौक़ा मिला और उस ख़ला (रिक्त स्थान) को भी पुर करने की कोशिश की जो बिरादरे अज़ीज़ मौलाना सय्यिद मुहम्मदुल हसनी की वफ़ात (1399 हि0–1979 ई0) से पैदा हुआ था, बाद में मौलाना डॉक्टर अब्दुल्लाह अब्बास नदवी (1426 हि0–2006 ई0) मोतमद तालीम नदवतुल उलमा की वफ़ात से जो ख़ला पैदा हुआ, वह भी उनके जरिये पुर किया गया जिस के लिए मजलिसे इन्तिज़ामिया नदवतुल उलमा ने उनका बइत्तिफाक़ इन्तिखाब किया था, निसाब व निजामें तालीम व तरबीयत में उनके मशवरों से हत्तल इमकान फाइदा उठाने की कोशिश की गई जिसके अच्छे नताइज नज़र आ रहे हैं। इसके साथ तदरीस व मुहाज़िरात का सिलसिला उन्होंने आखिर तक काइम रखा।

उनकी अपनी ज़िन्दगी में जिन मराहिल (चरणों) से गुज़रना हुआ, उनमें अल्लाह तआला की तौफीक़ से उनको अच्छा किरदार अदा करने का अवसर मिला, उनको अरबी की इस्तेदाद (योग्यता) हासिल करने के साथ अंग्रेज़ी को बेहतर बनाने का भी तक़ाज़ा (मांग) हुआ जिससे उनको अपनी अरबी सलाहीयत (योग्यता) की बिना पर जब रेडियो के अरबी शोबा (विभाग) में काम करने का मौक़ा मिला तो उनको अरबी और अंग्रेज़ी दोनों माहौल को समझने का मौक़ा मिला और बैरूनी (बाहर की) साज़िशों (षडयंत्रों) या खुद इस्लाम के सिलसिले में जो नुक्सानदेह (हानिकारक) कोशिशें काबिले फिक्र थीं, उससे भी जानकारी में सरलता हुई, रेडियो का माहौल निहायत मगरिबी (पश्चिमी) अन्दाज़ का था लेकिन अल्लाह तआला ने उसकी हानि से सुरक्षित रखा और उससे बचने का काम हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया कान्धिलवी रह0 से तअल्लुक़ रखने और तब्लीग़ी मरकज़ निज़ामुद्दीन में आने जाने से लेते रहे और यह तअल्लुक इतना बढ़ा और उसका यह परिणाम हुआ कि उन्होंने देहली की अहम मुलाज़िमत को तर्क करके नदवतुल उलमा की मामूली तन्ख्वाह की मुलाज़िमत को तरजीह (वरीयता) दी, और हज़ार की गिन्ती को सौ की गिनती में ले आये, यह एक ऐसी कुर्बानी थी जो उनके दीनी फाइदे का ज़रीआ बनी, फिर नदवा आ कर जो आलमे इस्लाम और आलमे अरबी के साज़िशी हालात थे, उनकी जो मालूमात उनको थी और फिक्रे इस्लामी (इस्लामिक विचार) व फिक्रे मगरिबी (पश्चिमी विचारधारा) का जो टकराव था, उससे जानकारी को अपने तलबा तक पहुंचाया जिस का एतिराफ और कद्रदानी का इज़्हार उनकी वफ़ात पर अक्सर ताज़ीयत नामों (शोक पत्रों) में मिलता है, उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में संजीदा और इलमी अन्दाज़ रखा जिसका इज़्हार व कद्रदानी का

तज़किरा (वर्णन) उनसे फाइदा उठाने वालों की तहरीरों (लेखों) में मिलता है, उन्होंने नदवतुल उलमा और अस्री खुसूसीयात का जामे होने का नमूना पेश किया, वह बिल आख़िर मोतमद तालीम मुन्तखब हुए और उस मन्सब को भी उन्होंने जिम्मेदारी और मुसबत अन्दाज़ से पूरा किया।

दावत व तब्लीग दीन की अमली जिद्दोजुहद में भी उन्होंने हिस्सा लिया था और दावते तब्लीग की बड़ी शख्सीयात हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कान्धिलवी और हज़रत मौलाना इनआमुल हसन कान्धिलवी रह0 के साथ उसके लिए मुल्क के मुख्तालिफ़ हिस्सों के दौरे भी किये थे जिनमें जुनूबी हिन्द, करनाटक, केरला, तमिलनाडु आदि और गुजरात के तब्लीगी सफ़र और देहली और उसके अतराफ़ के बड़े इजतिमाआत में शिरकत के सफर बड़ी अहम्मीयत के हामिल हैं, इसके अलावा तस्नीफ व तालीफ के ज़रिये उन्होंने जो खिदमात अन्जाम दीं, उसका एतिराफ (स्वीकरण) मुल्क और मुल्क से बाहर अहले इल्म व दानिश (विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों) की तरफ़ से मज़ामीन व मक़ालात व तअस्सुरात की शक्ल में खूब हो रहा है। जब कि अपनी चीज़ों की इशाअ़त (प्रसारण) और उन्हें सामने लाने में उनको हमेशा तकल्लुफ (संकोच) होता था और लोगों के बहुत तक़ाज़े पर ही वह उसके लिए तैयार होते थे, उसके साथ अफराद (लोगों) को तैयार करने का उनका अमल एक अलग खुसूसीयत (विशेषता) का हामिल था, उनकी तसनीफ़ात में एक यादगार काम हज़रत मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 की ''रिजालुल–फिक्र वद्दावा फिल–इस्लाम'' की तक्मील है जो उसके पांचवे हिस्से के तौर पर ''अल–इमाम अहमद बिन इरफान अश–शहीद'' सामने आई और मजलिसे तहक़ीकात व नशरियाते इस्लाम लखनऊ और शाम के दारुल –इशाअत दारे इब्ने कसीर से शाये (प्रकाशित) हो कर मक़्बूल हुई, इसके अलावा ''तारीखुल–शकाफतुल इस्लामीया'' ''तारीखुल–अदबुल –अरबी'' ''मसादिरुल –अदबुल अरबी'' उनकी निसाबी किताबें हैं और ''अदबुल अहलिल–कुलूब'' उनके बाज़ मक़ालात का मज़मूआ (लेखों का संग्रह) है जो राबि–तए–अदबे इस्लामी के सेमीनारों के लिए लिखे गये थे जिसे बाज मज़ामीन के इज़ाफे के साथ शाये (प्रकाशित) किया गया, यह किताब भी इल्म वालों व अदब के हल्कों में पसन्द की गई ''अर्रिहलातुल–हिजाज़ीया'' भी उनकी एक किताब है जिस में मुम्ताज़ अहले कलम (उच्च कोटि के लेखकों) के हिजाज़े मुक़द्दस की हाज़िरी के तअस्सुरात (मनोभाव) पेश किये गये हैं, उनकी फिक्री (विचारात्मक) किताबों में ''इला निजामिन आ़लमीयिन जदीदिन'' और ''अल गजविल –फिक्री'' को भी बहुत पसन्द किया गया। ''कज़ी–ए–फलस्तीन'' का रिसाला भी बहुत मक्बूल हुआ जो उर्दू ज़बान में है

और बहुत मालूमात अफ़्ज़ा है इसके अलावा हदीस शरीफ से मुतअल्लिक़ उन के दो रिसाले हैं, जिन्हें हदीस शरीफ के मुताले (अध्ययन) के दौरान, उनको इन्तिखाब करके पेश करने का ख्याल आया, एक का तअल्लुक शमाइले नबवी से और दूसरे का तअल्लुक़ आम इन्सानी व दीनी तक़ाज़ों व हुकूक़ से है, उनकी आखिरी किताब जो उनके सामने वफात से दो तीन दिन पहले छप कर आई थी, वह ''सहा–बए–किराम रज़ि0 की मिसाली जिन्दगी'' है जो पहले अरबी में छप चुकी थी और उर्दू एडीशन का उन्हें शिद्दत से इन्तिज़ार था जिस का मुक़दमा (पेशे गुफ़्तार) खुद उनके लाइक व सईद फरजन्द (बेटे) मौलवी सय्यिद जाफर मसऊद हसनी नदवी के क़लम से है जो उन्हें बहुत पसन्द आया था, इसके अलावा उर्दू और अरबी में मुतअद्दिद अहम किताबें और रसाइल हैं जिनमें हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन हसनी नदवी रह0 की फिक्र और मनहज़ व दावत पर उर्दू अरबी में किताबें हैं वह भी दावती और फिक्री हल्कों में बड़ी कद्र की निगाह से देखी जा रही है।

अल्लाह तआला ने उन्हें कुर्आनियात के मुताला (अध्ययन) का अच्छा ज़ौक़ भी अता फरमाया था, और अलफाज़ व मआनीये कुर्आन और उसकी बलागत पर उनकी बड़ी नज़र थी, और एक तरह से उन्हें रुसूख हासिल था। कुर्आन मजीद के बाज़ तर्जुमों पर उनकी इशाअत से पहले उन्होंने पूरी नज़र डाली थी और इस सिलसिले में अहले इल्म उन से खूब फाइदा उठाते थे मगर वह खुद इस सिलसिले में क़लम उठाने में बहुत मुहतात थे कि ख़िदमत बहुत नाजुक और हस्सास ख़िदमत है। कुर्आन मजीद की तिलावत में भी जिसका वह बहुत एहतिमाम करते थे, उसकी ताबीरात और जगह की तब्दीली से मआ़नी की तब्दीली और दूसरी खूबियों से उन पर एक खास कैफीयत तारी हो जाती थी। जिस का इन्तिक़ाल से एक दिन पहले भी कुर्आन मजीद सुनते हुए उनका यह एहसास सामने आया और भी मौक़ों पर और गुफ़्तगू के दरमियान सुनने और देखने को मिलता था, और उनकी इस खुसूसीयत के दूसरे भी क़द्रदां थे बाज़ फिक़्ही सेमीनारों में उनकी शिरकत से फाइदा उठाते हुए उसके जिम्मेदारों ने उनसे भी तौजीही (स्पष्टी करणीय) खिताब की माँग की, तो उसमें उनके खिताब से उनका रहनुमायाना तर्जे फिक्र जाहिर हुआ, और उससे अन्दाज़ा हुआ कि फिक़्ह से भी उनकी दिलचस्पी है और उसमें उनके फिक्री तौजीही अन्दाज़ से अच्छा फाइदा उठाया जा सकता है।

जहाँ तक उनकी दीनी सिफात का तअल्लुक़ है तो दीनी बातों का उनमें एहतिमाम, हुकूकुल्लाह की अदाइगी के साथ हुकूकुल इबाद (बन्दो के हुकूक) की पूरी फिक्र और कुर्ब बिन्नवाफिल (नफ़्लों द्वारा अल्लाह की निकटता प्राप्त करना) पर कुर्ब बिल–फराइज़ (फर्जों द्वारा अल्लाह की निकटता प्राप्त करना) को तरजीह (वरीयता) और इसका बड़ा खयाल उनकी जिन्दगी में नज़र आता था, खास तौर पर नमाज़ की फिक्र और उसके लिए मस्जिद का खयाल उनमें क़ाबिले रश्क़ हद तक था, जो अल्लाह को बहुत महबूब है और उस पर अर्श के साये का वादा है, इसी तरह कुर्आन मजीद से शगफ़ और उसकी तिलावत का बड़ा एहतिमाम था। नज़र की कमज़ोरी के सबब जब उनके लिए देख कर तिलावत दुश्वार हो गई तो दो तीन वक़्त सुनने का मामूल बनाया, वह अच्छी तिलावत करने वाले का इन्तिखाब करते, इसलिए कि मखारिज़ और हुरूफ़ की अदाइगी और तजवीद के उसूल पर उनकी नज़र होती थी, इसके अलावा अपने ज़िक्र व तस्बीह और सुब्ह व शाम और मुख्तलिफ मुनासिबतों की दुआओं के मामूलात का भी न सिर्फ एहतिमाम बल्कि उस पर मुदावमत थी और सि–लए रहमी, इयादत और खिदमते खल्क़ के दूसरे कामों का भी उनको खयाल रहता था और यह सब कुछ वह मख्फ़ी अन्दाज़ में (दिखावे से बचते हुए) करते थे।

जाहिर में अचानक उनकी वफ़ात का पेश आने वाला वाक़िआ हम सब अहले तअल्लुक़ (संबन्ध रखने वालों) के लिए बड़े ग़म (शोक) और हानि का था, विशेष कर मेरे लिए, कि उनका कई दहाइयों से हर वक़्त का साथ था, और उनके परामर्शों से सिर्फ़ तालीमी (शिक्षा) निजी तथा पारिवारिक समस्याओं ही में मदद नहीं मिलती थी, अपितु मिल्ली तथा सामूहिक कामों में भी बड़ा लाभ महसूस होता था। इसलिए यह मेरे लिए निजी तौर पर ऐसा खला (रिक्त स्थान) है, जो पुर होता नज़र नहीं आता। वह मुझ से यद्यपि उम्र में छोटे लेकिन बाकमाल (कुशल) भाई थे। मैं नहीं समझता था कि मुझे उनकी जुदाई का शोक उठाना पड़ेगा, लेकिन जो आया वह अल्लाह के यहां से अपनी आयु तथा जीविका लेकर आया है। ''बेशक अल्लाह ही की तरफ़ से है जो उसने लिया और जो उसने अता किया और इस सब के लिए उस के यहां एक वक़्त मुकर्रर है'' और यह कि ''अल्लाह का हुक्म तजवीज़ (निर्धारित) किया हुआ होता है'' अल्लाह तआ़ला उन्हें इल्लयीन में बड़े मरातिब से नवाज़े, उत्तम स्थान प्रदान करे और अपने मुकर्रबीन (निकटी अल्लाह वालों) के साथ उनका हश्र फरमाये।

आमीन।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे

इस्लामी कल्याणकारी व्यवस्थाएं

–मौलाना सय्यिद जलालुद्दीन उमरी

सार्वजनिक संपत्ति को हानि न पहुंचाई जाए

इस्लाम ने एक ओर तो वृक्षारोपण की प्रेरणा दी है, दूसरी ओर इस बात से भी रोका है कि किसी छायादार अथवा फलदार पेड़ को काट दिया जाय। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हबशी रज़ि0 रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया–

० ''जिसने बेरी का कोई पेड़ काटा, अल्लाह तआला उसे सिर के बल जहन्नम में डालेगा।'' (अबू दाऊद)

बेरी का पेड़ यदि किसी के स्वामित्व में हो तो वह उसे काट सकता है और उससे लाभ भी उठा सकता है। यह गुनाह नहीं है। यहां उस पेड़ को काटने पर यातना की सूचना दी गयी है जो किसी की निजी मिल्कियत न हो और जिससे जनसाधारण का हित जुड़ा हो।

इमाम अबू दाऊद इस हदीस की व्याख्या इस प्रकार करते हैं–

''जो व्यक्ति बेरी का वह पेड़ काटे जो मैदान में हो, जिससे यात्री और पशु छाया प्राप्त करते हों, यह काटना अकारण और अन्यायपूर्ण हो और उस पेड़ पर उसका कोई अधिकार न हो तो अल्लाह तआला उसे सिर के बल जहन्नम में डाल देगा।'' (अबू दाऊद)

इससे यह तर्क करना ग़लत न होगा कि सार्वजनिक संपत्ति से संबंधित किसी भी चीज़ को नुक़्सान पहुंचाना गुनाह का कारण है, क्योंकि यह ख़ुदा की मख़लूक़ को कष्ट पहुंचाने और उसे जो राहत और आराम पहुंच सकता है उसे समाप्त कर देने के समान है। अल्लाह के निकट यह हरकत बहुत नापसन्द और अशुभ है।

वे जीवन-साधन जो सार्वजनिक संपत्ति हैं:-

इस्लाम की विचारधारा यह है कि अल्लाह की इस धरती पर इन्सान की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो भंडार मौजूद हैं और जिनके पैदा करने में किसी व्यक्ति के परिश्रम का कोई योगदान नहीं है, वे सबके लिए हैं और सभी उनसे फ़ायदा उठाने का अधिकार रखते हैं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया–

० ''तीन चीज़ों में समस्त मुसलमान भागीदार हैं– पानी, चारा और आग।'' (अबू दाऊद)

इस हदीस में पानी से अभिप्राय प्राकृतिक जल स्रोतों, नदियों, दरियाओं और तालाबों आदि के पानी से है। इसी प्रकार पशुओं का वह चारा जो जंगलों और मैदानों में पाया जाता है उससे फ़ायदा उठाने का

अधिकार सबको प्राप्त है। आग से ईंधन में काम आने वाली लकड़ी और आग जलाने का सामान आदि से हो सकता है, जो किसी की निजी मिल्कियत में न हो।

क़ौमी महत्व के साधन सबके लिए हैंः–

क़ौमी और राष्ट्रीय महत्व के जीवन–साधन किसी व्यक्ति के स्वामित्व में नहीं होंगे, बल्कि उनसे सभी को फ़ायदा उठाने के समान अवसर प्राप्त होंगे। उबैज़ बिन हम्माल रज़ि0 बयान करते हैं कि वे अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि 'मआरिब' (यमन का एक क्षेत्र) में नमक की जो खान है वह उन्हें प्रदान कर दी जाए। आप सल्ल0 ने वह खान उन्हें दे दी। जब वह वापस हुए तो एक व्यक्ति अक़रा बिन हाबिस ने कहा– आपने उन्हें एक ऐसी खान प्रदान कर दी जो पानी के भंडार के समान है, वहां का प्रत्येक व्यक्ति उससे लाभ उठाता है। अतः आप सल्ल0 ने उनसे वह खान वापस ले ली।

आपके प्रश्नों के उत्तर......

में यानी हिल्ल में एहराम बांध कर हुदूदे हरम में दाख़िल हो मगर इस सूरत में उसको एक दम यानी एक कुर्बानी का जुर्माना अदा करना पड़ेगा।

प्रश्नः क्या सिले कपड़े उतार कर एक चादर नीचे बांध ले और एक चादर ऊपर ओढ ले तो आदमी एहराम में आ जाता है?

उत्तरः मर्दों के लिए एहराम में सिले कपड़े उतार देना और एहराम की चादरें पहन लेना ज़रूरी है लेकिन सिर्फ एहराम की चादरें पहन लेने से एहराम में नहीं आता बल्कि एहराम की चादरें पहन कर हज या उमरे की नीयत करे और आवाज़ से लब्बैक कहे तब एहराम में आता है, नीयत से पहले मौक़ा हो तो वुज़ू करके दो रकअ़त नमाज़ भी पढ़े अगर मौक़ा न हो तो नमाज़ पढ़े बगैर एहराम की नीयत कर ले।

प्रश्नः क्या औरतों के एहराम के लिए भी कोई खास लिबास होता है?

उत्तरः औरतों के एहराम के लिए कोई ख़ास लिबास नहीं होता, वह अपने आम लिबास में एहराम की नीयत करेंगी अलबत्ता लिबास सातिर हो मगर एहराम की नीयत के बाद चेहरा खुला रहेगा कोई अजनबी (ना महरम) सामने आ जाये तो पंखे वगैरा से आड़ ले सकती हैं मगर पंखा चेहरे पर न रखें वह निकाब भी पहन सकती हैं और पहनती हैं लेकिन एहराम की हालत में चेहरा खुला रहे, मौक़ा हो तो वह भी एहराम की नीयत से पहले वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ लें, औरत हैज की हालत में भी उमरे या हज के लिए एहराम की नीयत करेगी अलबत्ता वह पाक होने के बाद ही हरम में दाखिल होगी और तवाफ़ करेगी। चाहे तवाफ उमरे का हो या ज़ियारत का या नफ़्ली, हैज की हालत में न वह नमाज़ पढ़ेगी न तिलावत करेगी अलबत्ता लब्बैक पढ़ेगी दुआयें पढ़ेगी दुरूद शरीफ पढ़ेगी अरफ़ात जायेगी मुजदल्फा जायेगी और रमी भी करेगी।

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلماء
ص.ب.۹۳/، تیغور مارغ،
لکناؤ-۲۲۶۰۰۷ یوبی (الهند)

Date ______________   التاريخ ______________

09/09/2018   ۲۸/ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

सऊदी अरब में मशहूर शहर मक्क़ा है।
मक्का शहर में अल्लाह का घर काबा है।
अल्लाह तो किसी घर में घिर नहीं सकता।
अल्लाह ने कअ़बे को अपना घर कहा है।
इसलिए हम भी क़अ़बे को अल्लाह का घर कहते हैं।
कअ़बे का तवाफ़ अहम तरीन इबादत है।
एक ख़ास तरीक़े से क़अ़बे के गिर्द सात चक्कर लगाते हैं।
फिर दो रक़अ़त नमाज़ पढ़ते हैं।
तो एक तवाफ़ होता है।
कअ़बे के सिवा किसी और घर का तवाफ़ करना जाइज़ नहीं।

سعودی عرب میں مشہور شہر مکّہ ہے۔

مکّہ شہر میں اللہ کا گھر کعبہ ہے۔

اللہ تو کسی گھر میں گھر نہیں سکتا۔

اللہ نے کعبہ کو اپنا گھر کہا ہے۔

اس لیئے ہم بھی کعبہ کو اللہ کا گھر کہتے ہیں۔

کعبہ کا طواف اہم ترین عبادت ہے۔

ایک خاص طریقہ سے کعبہ کے گرد سات چکر لگاتے ہیں۔

پھر دو رکعت نماز پڑھتے ہیں۔

تو ایک طواف ہوتا ہے۔

کعبہ کے سوا کسی اور گھر کا طواف کرنا جائز نہیں۔